फुतूहुल हरमैन

फी

मुबश्शिराति रसूलिस्सकलयान

लेखक

हज़रत अलहाज़ मौलाना शाह मुहम्मद हिदायत अली साहिब

जयपूरी नक़शबंदी मुजद्दिदी रहमतुल्लाहि अलयह

अनुवादक

• अब्दुलकादिर फातीवाला

• मौलवी मुहम्मद यूनुस मुन्शी फलाही

फुतूहुल हरमैन
की
मुबश्शिराति रसूलिस्सकलयन

लेखक

हज़रत अलहाज़ मौलाना शाह
मुहम्मद हिदायत अली साहिब
जयपूरी नक़्शबंदी मुजद्दिदी
रहमतुल्लाहि अलयह

अनुवादक

- अब्दुलकादिर फातीवाला
- मौलवी मुहम्मद यूनुस मुन्शी फलाही

प्रकाशक

'अल हिदायह इस्लामिक रीसर्च सेन्टर
जामिअतुल हिदायह, वादीअे हिदायत,
रामगढ रोड, जयपूर 303 013

प्रकाशन वर्ष

'जमादियुल् अव्वल, हि.स. 1432, अप्रैल, ई.स. 2011

'जामिअह हिदायत ट्रस्ट' का मुख्य कार्यालय

1617, खेजरेका रास्ता, इन्दिरा बाज़ार समीप,
हिदायत मस्जिदके सामने, जयपुर : 302 001(राजस्थान)
फोन : (0141) 2319935, 2312386 फेक्ष : 2311247
e-mail : info.@jameatulhidaya.org
web site : www.jameatulhidaya.org

'मौलाना अब्दुर्रहीम एजयुकेशनल ट्रस्ट' और 'इमामे रब्बानी सीनीअर सेकन्डरी स्कूल'का मुख्य कार्यालय

हिदायत बाग, महोल्ला हांडीपूरा, जगन्नाथ सहायका मार्ग,
चार दरवाज़ा समीप, जयपुर : 302 001(राजस्थान)
फोन : (0141) 2601221, फेक्ष : 2604356, 2601679
e-mail : mfazlurrahim@yahoo.com
web site : www.cacademy.org

'अंजुमने हिदायत' सूरतके खादिम

- **हाजी मुहम्मद बिलाल अमला रहीमी साहिब**
5 / 1643, हरीपूरा, हसनजीका टेकरा, गुंबदवाली मस्जिद समीप,
मोबाइल : 098256 57835 और 094278 24554
- **मौलाना ज़ियाउर्रहीम रहीमी सा.** (099740 34310)
- **हाजी मुहम्मद यूसुफ ज़रीवाला साहिब** (097140 80519)
हिदायत मस्जिद, मौलवी स्ट्रीट, तलावडी, सगरामपूरा, सूरत

आवश्यक स्पष्टीकरण

पाठकोंकी सुविघाके लिए, इस पुस्तकमें निम्न लिखित बातें, अनुवादकोंने अपनी तरफसे लिखी हे । यह बातें असल उर्दू पुस्तकमें नहीं है ।

- आरंभमें संपूर्ण पुस्तककी विषय सूची
- विषय और द्यटनाओंके शीर्षक
- कठिन पारिभाषिक शब्दोंके अर्थ और विवरण
- बुजुर्गोके कुछ प्रतिभाव
- कुछ कुर्आनिक और ऐतिहासिक द्यटनाओंकी तरफ इस पुस्तकमें मात्र संकेत किए गऐ है । अनुवादकोंने उन द्यटनाओंकी विस्तृत माहिती उपलब्ध करके 'अनुवादकीय' शीर्षकसे लिखी है ।
- इस पुस्तकके लेखकके हजके साथी माननीय जनाब अब्दुल अज़ीज़ भाई टेलर (रह.) सूरती और उनके सुपुत्र जनाब हाशिम भाई टेलर (रह.) सूरतीसे प्राप्य इस शुभ यात्राकी कुछ विशेष द्यटनाअें भी इस पुस्तकमें सम्मिलित की गई है ।
- अंतमें निम्नलिखित तीन परिशिष्ट भी सम्मिलित किए गए है ।

(१) पुस्तकें (किताबियात)

(२) शख्सियात (व्यकितयाँ)

(३) मक़ामात (जगहें, स्थानें)

विषय सूचि

आमुख

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुर्रहीम साहिब मुजद्दिदी (रह.)

- हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद हिदायत अली साहिब (रह.)के पौत्र, खलीफा और जानशीन (गादीपति)
- 'जामिअह हिदायत' जयपूरके स्थापक

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمُ
نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمُ

मदीनह मुनव्वरहको अल्लाह तआलाने हबीबे खुदा अलयहिस्सलातु वस्सलामके कारण जो महिमा और महानता अर्पित की है वह किसी भी साहिबे इल्म (ज्ञानी) और साहिबे बसीरत (अंत:ज्ञानी)से छूपी नहीं है ! हिजरतके हुकमके बा'द नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामने जो दुआ फरमाई उससे भी मदीनह मुनव्वरहकी फज़ीलत (महीमा) साबित होती है ।

और हजके अरकान (क्रियाए) अदा करनेके बा'द मदीनह मुनव्वरहमें पवित्र रोज़ाकी हाजरीको हजकी परिपूर्णताका सबब माना जाता है । इसी कारण हजके बा'द मदीनह मुनव्वरहकी हाजरीका सम्मान प्राप्त किया जाता है ता कि वह विशेष इन्आमोंको भी प्राप्त किए जाऐं जो हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी कृपा द्दष्टि और विशेष ध्यान (लक्ष)से सिर्फ मदीनह

मुनव्वरहकी हाजरीके बा'द ही प्राप्त होते है ।

- शाह वलीयुल्लाह साहिब मुहद्दिस दहेलवी अलयहिर्रहमहने 'फुयूज़ुल् हरमैन' और 'दुर्रुस समीन फी मुबश्शिराति नबीय्यिल् अमीन' (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम)में और
- शाह अब्दुल हक़ साहिब अलयहिर्रहमहने 'जज़्बुल् कुलूब फी दयारिल् महबूब' में इसी विशेष इन्आमोंका वर्णन किया है ।

शाह वलीयुल्लाह साहिब अलयहिर्रहमहने यह हक़ीक़त (वास्तविकता) भी प्रगट की है कि :

> ''फक़ीरने (मैंने) हुज़ूर अलहिस्सलातु वस्सलामके पवित्र रोज़हकी हाजरीके समय लगभग ४० (चालीस) बार आपने अपनी मुबारक ज़ियारत (दर्शन)से मुशर्रफ फरमाया और कृपा फरमाई !''

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद हिदायत अली साहिब अलयहिर्रहमहने भी हि. स.1365(ई.स. 1945) में मर्हूम हाजी शेठ इस्माईल भाई टेलर और दूसरे साहिबोंके साथ हजका फर्ज़ अदा किया और पौने दो महीने मक्का मुअज़्ज़महमें हाजिर रहे और बा'दमें लगभग साडे तीन महीने रोज़ए अक़्दस और हरमे नबवीमें हाजरीका सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

हज़रत मौलाना शाह हिदायत अली साहिब अलयहिर्रहमह पर नबीए करीम अलहित्तहिय्यतु वस्सलामकी नज़रे करम (कृपादृष्टि) जीवनके प्राथमिक कालसे ही रही जब कि आप अपने

शयूख हज़रत शाह मुहम्मद अली शेरखान साहिबसे बयअत भी हूए नहीं थै और विपुल मात्रामें दुरूद शरीफका विर्द (आप) पाबंदीसे किया करते थे ।

आप फरमाते थे कि :

''हरमैन शरीफैनकी हाजरीसे पूर्व हुजूर नबीए करीम अलयहित्तहिय्यतु वत्तस्सलीमने लगभग १४० (एकसो चालीस) बार ज़ियारत (दर्शन)से मुशर्रफ फरमाया और करम (कृपा) फरमाया और हरमे नबीए करीम अलहित्तहिय्यतु वत्तस्सलीममें साढे तीन महीना हाजरीका शर्फ प्राप्त हुआ तब दुर्भाग्यसे ही कोई दिन ऐसा गुज़रा होगा जिसमें दो—दो, तीन—तीन बार या एकसे अधिक बार ज़ियारतसे मुशर्रफ फरमाया न हो ।''

यही इन्आम और इकराम, जो हरमैन शरीफैनकी हाजरीके समय अल्लाह तआला और उसके हबीब अलयहिस्सलातु वस्सलामकी नज़रे करम और विशेष तवज्जुह (लक्ष)से प्राप्त हूए, उसे हज़रत अलहिर्रहमहने 'फुतूहुल् हरमैन फी मुबश्शिराति रसूलिस्सकलय्न' में लिखे । इसका प्रथम मुद्रण 'हक़' (उर्दू) सामयिकके तंत्री मर्हूम मव्लवी अब्दुल् हक़ साहिबकी निगरानीमें लखनऊमें हुआ ।

'फुतूहुल् हरमैन' छप जानेके बा'द एक दिन हज़रत अलयहिर्रहमहने अत्यंत प्रेमसे फरमाया :

''अब्दुर्रहीम ! इस किताबमें भूलसे दो घटनाओं ऐसी लिख

दी गई है कि जो कोई तालिबे हक़ तसव्वुफकी परिभाषासे परिचित होगा या आरिफो (ब्रह्मज्ञानीओं)की सुहबत (सत्संग) उसे प्राप्त हूई होगी तो वह इन दोनों घटनाओंसे मेरे मर्तबाका अंदाज़ा लगा सकता है ।

(१) 'इत्तिसाले रूहानी' (२) 'ज़िम्नियते कुब्रा'

आप 'फुतूहुल् हरमैन'में लिखते है कि :

''एक दिन मैंने स्वप्नमें देखा कि, मेरा अवसान हो गया है और मेरी क़ब्र पर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम और इमामे तरीक़ए क़ादिरीयह हज़रत अब्दुल् क़ादिर जीलानी अलहिर्रहमह फातिहाके लिए पधारे ।

इस दरमियान मेरी क़ब्र फटी और मेरा शरीर अर्धसे अधिकतर क़ब्रसे बाहर आ गया और मैं नबीए करीम अलयहित्तहिय्यतु वत्तस्लीमकी तरफ अभिमुख हो कर बैठा ।

उस समय आपने ऐसी कृपा फरमाई कि मेरा चहेरा (मुख) नबीए करीम अलयत्तिहिय्यतु वत्तस्लीमके जैसा हो गया !

थोडे समय बा'द मेरा चहेरा (मुख) अपनी असली हालत पर आ गया ।''

इसे तसव्वुफकी परिभाषामें इत्तिसाले रूहानी कहा जाता हैं।

नबीए करीम अलयहित्तहिय्यतु वत्तस्लीमसे इत्तिसाले रूहानी रखनेवाले अकाबिरीन (महात्मा) हर ज़मानेमें नहीं होते है,

जब भी होते है खुदाकी मख्लूक़ (सृष्टि)के लिए रहमतके निमित्त होते है ।

दूसरी घटना 'फुतूहुल् हरमैन'में लिखते है कि :

''एक दिन मैंने स्वप्न देखा कि, नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम उपस्थित हैं और आपका पवित्र देह दो हिस्सोमें विभाजित हो गया है ! और आपके पवित्र देहके इन दोनों हिस्सोंने मेरे देहको अपने अंदर विलिन कर लिया !

थोडे समय बा'द देखता हूँ कि मैं अलग खडा हूँ और हुज़ूर अलहिस्सलातु वत्तस्लीम अलग खडे है ।''

इस कैफियतको तसव्वुफकी परिभाषामें 'ज़िम्नियते कुब्रा' कहा जाता है । इस निस्बत और शानवाले अकाबिरीन (महात्मा) भी हर ज़मानेमें नहीं पाए जाते । और जब भी पाए जाते है तो खुदाकी खल्क़ (सृष्टि)के लिए बाइसे रहमत (कृपाका निमित्त) होते है ।

इसी प्रकारकी और बहुतसी घटनाऐं जो दोनों पवित्र हरमकी हाजरीके समय सामने आई उससे नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी असामान्य नज़रे करम (कृपादृष्टि) हज़रत साहिब अलयहिर्रहमह पर मा'लूम होती है और हर ज़ाइर (दर्शनार्थी) पर हैसियतके अनुसार हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामका कृपा करना फुतूहुल् हरमैनमें बयान किया गया है ।

'फुतूहुल् हरमैन' दूसरी मरतबा गुजराती लिपी और उर्दू

भाषामें मुहतरम मुहम्मद भाई चांद भाई मर्हूमकी ख्वाहिश और उन्हीकी निगरानीमें हाजी उमर भाई हाजी हन्नान भाई मोडासावालेने प्रकाशित की ।

तीसरी मरतबा करांचीमें हकीम सय्यिद महमूद अली साहिबकी निगरानीमें उर्दू भाषामें पेश लफज़ (आमुख)के साथ प्रकाशित हुई ।

अब यह चोथी मरतबा आफसेट पर मुहतरम अब्दुल कादिर भाई फातीवालाकी निगरानीमें और मुहतरम अब्दुस्सत्तार भाई चोकसी सूरतीकी हिम्मतसे खालिद अहमद बरकत साहिबके माध्यमसे मुद्रणके आभूषणसे आभूषित हूई ।

अज़ीज़े मुहतरम अब्दुल क़ादिर भाई फातीवालाने जिस तरह हज़रत क़िब्ला अलयहिर्रहमहकी दूसरी तमाम किताबोंको गुजराती भाषामें अनुवाद करके एक क़िमती वृ   द्ध की है । इसी तरह फुतूहुल् हरमैनको भी गुजराती भाषामें अनुवाद करके मित्रोंकी तमन्ना पूर्ण की है ।

मुज़े प्रबल आशा है कि इनकी यह कोशिश कृतज्ञताकी दृष्टिसे देखी जाएगी । अल्लाह तआला अज़ीज़ मौसूफकी इन सेवाओंको स्वीकार करके दोनों जगतमें विपुल बदला अर्पित करे । आमीन ।

6, शव्वाल, 1409 हिजरी
22, मई, 1989 ईस्वी

सेवक,
मुहम्मद अब्दुर्रहीम

प्रकाशकीय

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फज़्लुर्रहीम साहिब मुजद्दिदी दामत् बरकातुहुम

साहबज़ादह, खलीफा व जानशीन (गादीपति) :
हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुर्रहीम साहिब मुजद्दिदी
रहमतुल्लाहि अलयह (स्थापक : जामिअह हिदायत, जयपूर)

अमीर (कुलपति, चान्सेलर) :
'जामिअह हिदायत' (अेरेबिक युनिवर्सिटी) जयपूर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَاَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ وَاَكْمَلُ التَّحِيَّاتِ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنْ

ज़मीं व समां सब सलातो सलाम,
मकीं व मकां सब सलातो सलाम ।

सलातो सलाम और सलातो सलाम,
मेरा जिस्म व जां सब सलातो सलाम।

सृष्टिके सर्जनहार, मुल्क व मलकूतके मालिक, सबको रोज़ी देनेवाले, हक़ तआला शानुहूकी मुहब्बत एक प्राकृतिक और आवश्यक चीज़ है । बल्कि मनुष्यकी और सृष्टिकी खासियत है । सर्जितके ज़िम्मे अपने सर्जनहार और मालिक, अपने उपकारी और

पालनहारकी मुहब्बत आवश्यक है ।

जिस व्यक्तिमें अपने सर्जनहार, मालिक, पालनहार और उपकारीकी मुहब्बत नहीं है वह मनुष्यकी सहीह प्रकृति पर नहीं है। जानवर भी अपने उपकारीको पहचानता है और उसकी वफादारी और शुक्र गुज़ारीमें अपनी जान तक खपा देता है । मनुष्य तो अल्लाह तआलाका सर्व श्रेष्ठ सर्जन है, बुद्धिमान है और समजदार है, तो उसको किस क़दर शुक्र और वफाका साक्षात स्वरूप होना चाहीए ?

बस जब हक़ तआला शानुहूकी मुहब्बत मनुष्य पर आवश्यक और अनिवार्य है तो फिर उस पर उसके महान पैगम्बर, सब मानवोंके उपकारी, हज़रत रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पैरवी (अनुसरण)भी आवश्यक है ।

जैसा कि खूद हक़ तआला शानुहूका इर्शाद है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (سورۂ آل عمران : ۳۱)

अर्थात :

ए नबी ! आप फरमा दिजीए के : अगर तुम अल्लाह तआलासे मुहब्बत रखते हो तो तुम लोग मेरी पैरवी (अनुसरण) करो । अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे । और तुम्हारे सब गुनाहोंको मुआफ (क्षमा) कर देंगे । और अल्लाह तआला बडे क्षमाशील, बडे ही कृपालु है ।

इस आयतमें अल्लाह तबारक व तआलाने अपनी मुहब्बतका दा'वा करनेवालोंको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पैरवी (अनुसरण)का आदेश फरमाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पैरवी (अनुसरण)को अपनी मुहब्बतकी निशानी निर्धारित की बल्कि अपनी मुहब्बतके लिए शर्त फरमाया और पैरवी (अनुसरण)की परिपूर्णताके लिए आपकी मुहब्बत भी आवश्यक है ।

जब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे मुहब्बत होगी तब ही पैरवीकी परिपूर्णता प्राप्त होगी ।आपकी सच्ची मुहब्बतके साथ आ'माल (कर्म) और अख्लाक़ (शिष्टाचार)में भी आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पैरवी और अनुसरणमें एक खास कैफ (अनुभूति) और सुरूर (आनंद) और अजीब लुत्फ और लज़्ज़त (मज़ा)का अेहसास होता है ।

اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُحِبُّ مُطِيْعُ

अर्थात :

बेशक आशिक़ मा'शूक़का आज्ञांकित होता है ।

बेशक रसूले अकरम, महान उपकारी, सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तमाम औलिया, अम्बिया, मलाइकह (फरिश्तें) और समग्र सृष्टिसे अधिक पवित्र और अज़मतवाले हैं ।और आपको तमाम अम्बिया अलयहिमुस्सलामके उलूम (ज्ञान) और मुअजिज़ात (चमत्कार) और दैहिक तथा आत्मिक खूबियाँ अन्य सबकी तुलनामें अधिकतर दी गई है ।

हुस्ने यूसुफ, दमे ईसा, यदे बैज़ा दारी,
आँचे ख़ूबां हमह दारंद तू तन्हा दारी ।

अर्थात :

अल्लाह तआलाने :

- हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामको अनुपम हुस्न (खूबसूरती, सौंदर्य) अर्पण किया था ।
- हज़रत ईसा अलयहिस्सलामके दम (फूंक)में वह ता'षीर अर्पण की थी कि मुर्दा फिरसे ज़िंदह और रोगी निरोगी हो जाता था ।
- हज़रत मूसा अलयहिस्सलामके हाथमें ऐसी चमक अर्पण की थी कि उसे खोल देनेसे प्रकाश फैल जाता था ।
- इसी तरह प्रत्येक पैगम्बर अलयहिस्सलामको अल्लाह तआलाने एक—एक अनुपम खूबी अर्पण की थी ।

लेकिन ए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम !

तमाम पैगम्बरों (अलयहिमुस्सलाम)की इन तमाम खूबीओंसे अल्लाह तआलाने आप अकेलेको आभूषित किया हैं ।

बाह्य और आंतरिक, लौकिक और अलौकिक, खूबियाँ और खूबसूरती तथा इहसान (उपकार और आध्यात्मिकता)में न आप जैसा कोई हुवा न होगा ।

बा'द अज खुदा बुजुर्ग तूई क़िस्सा मुख्तसर

{सारांश यह है कि अल्लाह तआलाके बा'द आप सर्वोत्तम हैं ।}

- सय्यिदुल मुर्सलीन (रसूलोंके सरदार)

- हबीबे रब्बुल आलमीन (तमाम जगतोंके पालनहारके प्रिय)
- रहमतुल लिल आलमीन (तमाम जगतोंके लिए रहमत)
- शफीए आज़म (महान शफाअतकर्ता)
- मेरे माता—पिता, मेरी जान और मेरा जिस्म उन पर कुर्बान ।

आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी कृपाऐं और उपकार समग्र क़ाइनात (जगत) पर, और सर्व सृष्टि पर हैं । विशेषत: इस उम्मत पर इस क़दर अगणित व असंख्य उपकार है कि अगर ज़िंदगीभर भी शुक्रगुज़ारी की जाए तो एक उपकारका शुक्रियह (आभार)भी उसके हक़ अनुसार अदा नहीं हो सकता ।

आं हज़रत सल्लल्लाहुअलयहि व सल्लम ही के सबबसे इस उम्मतने:

- खैरे उम्मत (उमदा उम्मत) और
- अफज़लुल (सर्वोत्तम) उम्मत
- उम्मते मरहूमह (स्वर्गगामिनी उम्मत)
- उम्मते रहमत
- उम्मते मुअतदिलह (मध्यममार्गी उम्मत)

का लक़ब पाया । और अल्लाह तआलाके विविध प्रकारके असंख्य इन्आमों और सन्मानों और विशिष्टताओंसे इस उम्मतको नवाज़ा गया । जिनकी बिना पर महान पैगम्बरोंने इस उम्मतमें प्रवेश पानेकी तमन्ना की और दुआ मांगी ।

इस लिए आपके सच्चे उम्मतीके लिए आं हज़रत सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम सब रिश्तेदार, स्नेहीजन, मित्रों और दुनिया तथा दुनियामें जो कुछ हैं उन सबसे अधिक महबूब (प्रिय) हैं ।

आपके बेमिसाल (अनुपम) सौंदर्य और खूबियाँ और उपकारोंके

सबब आप तमाम जगतोंके पालनहारके महबूब (प्रिय) भी हैं और सर्व सृष्टि और अस्तित्वधारी आपकी मुहब्बत और इश्क़से लबरेज़ और पुरअनवार हैं ।

किसी शाइरने कया खूब कहा है :

व सल्लल्लाहु अला नूरिन् कज़ू शुद नूरहा पैदा;
ज़मीं दर हुब्बे ऊ साकिन फलक़ दर इश्क़े ऊ शयदा।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़तने अपने महान फज़्ल और असीम कृपासे इश्क़ और मुहब्बतकी इस रोशनी और चाशनीसे जिन भाग्यवान आत्माओंको खास तौर पर नवाज़ा उनमें सबसे आगे :

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके :

- खुलफाए राशिदीन (प्रथम चार खुलफा) (रदियल्लाहु अन्हुम)
- अज़्वाजे मुतह्हरात (पुनीत पत्नीयाँ) (रदियल्लाहु अन्हुन्न)
- बनाते तय्यिबात (पुनीत साहबज़ादियाँ) (रदियल्लाहु अन्हुन्न)
- सहाबए किराम (रदियल्लाहु अन्हुम)
- ताबिईने इज़ाम (रहिमहुमुल्लाहु) का पवित्र समूह हैं ।

फिर उनसे फैज़ ग्रहण करनेवाले, हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलामके सच्चे वारिस :

- शरीअत और तरीक़तके इमाम
- महान औलिया और
- उलमाए किराम और
- उम्मतके सुलहा (नेक लोगों)का

एक बरकतवंत और नूरानी क़ाफला हैं जो कल्याण और काम्याबीकी मंज़िलकी तरफ तेज़ीसे आगे बढता जा रहा हैं ।

जिसने नबवी युगमें आज तक (और इन्शाअल्लाहुल अज़ीज़ आगामी ज़मानेमें भी) हर दौरमें अंतिम नबी, तमाम जगतोंके लिए रहमत सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी रोशन की हूई शम्ए हिदायतको न सिर्फ रोशन व शरफरोज़ां रखा बल्कि उसके अनवार और बरकतोंको मुल्क मुल्क, शहर शहर, गाँव गाँव, चप्पा चप्पा फैलाया और आम किया । और अपने पाकीज़ा आ'माल और अख्लाक़ (शिष्टाचार) और नमूना समान मूमिनह चरित्रसे :

- अक़ाइद और आ'माल,
- अख्लाक़ और आदाब,
- तहज़ीब और तमद्दुन (संस्कार और संस्कृति)में

महान क्रान्ति कर दी जिनसे :

- लोगोंके दिल ईमान और आध्यात्मिकताके अनवारसे मुनव्वर हूए
- सलाह और फलाह (कल्याण और काम्याबी)की मंज़िलके मुसाफिरोंके लिए वह नूरके मीनार साबित हूए ।

فَجَزَاهُمُ اللّٰهُ عَنَّا وَعَنِ الْاُمَّةِ خَيْرَ الْجَزَاءِ

अर्थात :

बस अल्लाह तआला हमारी तरफसे और पूरी उम्मतकी तरफसे उनको सुंदर बदला अर्पण फरमाए ।

अल्लाह तआलाके इन ही खास बंदे और उसकी बारगाहकी बरकतवंत हस्तीयोंमें राजस्थानकी घरतीके नामवर आरिफ बिल्लाह, महान नक़शबंदी मुजद्दिदी बुजुर्ग हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद हिदायतअली साहिब रहिमहुल्लाह हैं, जिनके रूहानी

फैज़ और उलूम और इरफानसे एक ज़माना तृप्त हुआ और अल्लाह तआलाके लाखों बंदोंके दिल इल्मे बातिन (आध्यात्मिकज्ञान)से, अल्लाह तआलाकी मअरिफत (पहचान)से फैज़याब हो कर नफस (अंतरआत्मा)की सफाई और स्वच्छताकी नेअमतसे मालामाल हूए और अल्लाह तआलाकी निकटताकी मंज़िलों और मर्तबोंसे सरफराज़ हूए और अल्लाह तआलाके करम, कृपा और तौफीक़से फैज़का यह चश्मह अभी तक जारी सारी हैं और इन्शाअल्लाहुल् अज़ीज़ जारी रहेगा ।

وَمَا ذٰلِکَ عَلَی اللّٰہِ بِعَزِیْزٌ

अर्थात :

और अल्लाह तआलाके लिए यह कोई मुश्किल काम नहीं हैं ।

अंतरआत्माकी इस्लाह और नफसकी सफाई और दिलकी स्वच्छताके संबंधित हज़रत शाह मुहम्मद हिदायतअली साहिब (रह.)की क़द्रपात्र अत्यंत मूल्यवान किताबें आघी सदीसे भी अधिक समयसे :

- उलूम (ज्ञान) और मआरिफ (अल्लाहकी पहचान)के प्यासे,
- सिद्क़ और सफाके तालिबों,
- इश्क़ और मुहब्बतके मतवालों

के लिए दवाए दिल उपलब्ध कर रही है ।

उनमें एक अपने तर्ज़की अनोखी किताब, जो हज़रत (रह.)का हज और ज़ियारतका सफरनामह हैं, "फुतूहुल् हरमैन फी

मुबश्शिराति रसूलिस्सक़्लैन"   है ।

इस किताबमें हज़रतने :

- मक्का मुअज़्ज़महमें क़ियामके, और
- मस्जिदे हराम और खानए कअ्बहके तवाफ और ज़ियारतके हालात और उस समय :
- वारिदाते क़ल्बी, और
- अल्लाह तआलाकी तरफसे इन्आम और इकरामकी जो वर्षा हूई

उसे बयान फरमाया हैं । उपरांत :

- रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी बारगाहमें मदीनह मुनव्वरहकी हाज़िरी और
- रोज़ए अक़्दसकी ज़ियारत और
- अव्वलसे आखिर तकके सब लोगोंके सरदारके पवित्र और महान दरबारकी हाज़िरीके समय जो असामान्य कृपादृष्टि, इन्आम और सन्मान और रूहानी नवाज़िशात पेश आयें उनका संक्षिप्त वर्णन फरमाया है ।

जिसे पढकर ईमान ताज़ह होता है । आम तौर पर हर उम्मतीके लिए और खास तौर पर हरमके यात्रीओंके लिए आत्माकी खुराक, दिलकी शिफा और सौभाग्यकी पूंजी है ।

इससे अल्लाह तआला और उसके पाक रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बत और पैरवी और अल्लाह तआलाकी रज़ा और नबीए बरहक़ सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लमकी पैरवीका जज़्बह (भावना) पैदा होता है जो मुअ्मिनके लिए हक़ीक़ी और अविनाशी दौलत और नेअमत है ।

इस किताबके पठनसे न सिर्फ यह कि हुज़ूरे पाक अलयहिस्सलातु वस्सलामसे इश्क़ और मुहब्बतमें वृद्धि होगी बल्कि यह मुहब्बत बढती चली जाएगी और ईमानकी कुव्वत व हलावत (मधुरता) और अंतरात्माकी पवित्रतामें प्रगति होगी ।

हक़ीक़त यह है कि जब तक हम सच्ची मुहब्बतके साथ हज़रत मुहम्मद मुस्तफा, अहमदे मुज्तबा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पैरवी और अनुसरणका दामन थामे रहेंगे और दीनके सच्चे शैदाई बने रहेंगे, हर क़दम पर अल्लाह तआलाकी सहाय, और दुनिया और आख़िरतकी काम्याबी और सफलता हमारे क़दम चूमेगी ।

कुव्वते इश्क़से हर पस्तको बाला कर दे;
दहरमें इस्मे मुहम्मद (सल.)से उजाला कर दे ।
की मुहम्मद (सल.)से वफा तूने तो हम तेरे हैं;
यह जहां चीज़ है कया लव्हो क़लम तेरे हैं ।
हर के इश्क़े मुस्तफा (सल.) सामाने उस्त;
बहर व बर गोशए दामाने उस्त ।

हमारे विद्धान क़लमकार, स्नेही और कृपालु अल्हाज जनाब अब्दुलक़ादिर साहिब फातीवाला, जो हज़रत अबूमियाँ (रह.)के नामवर खुलफामें हैं, खुसूसी मुबारकबादके अधिकारी हैं

कि उन्होंने हज़रत शाह मुहम्मद हिदायतअली साहिब (रह.)की तमाम किताबोंका प्रथम गुजराती भाषामें अनुवाद किया जो काफी लोकप्रिय और लाभकारक साबित हुवा ।

उपरांत नक़्शबंदी औलियाके शीर्षकसे हुज़ूरे पाक अलयहिस्सलातु वस्सलामसे लेकर हज़रत मुजद्दिदे अल्फेसानी (रह.) तक नक़्शबंदियह सिलसिला (आध्यात्मिक संप्रदाय)के महान बुज़ुर्गों रहिमहुमुल्लाहु तआलाके पाकीज़ह नूरानी अहवाल (वृतांत) और सवानिह (जीवनचरित्र)को संपादित फरमाकर गुजराती भाषामें प्रकाशित किया ।

नीज़ दीनी, इस्लामी विषयमें बुज़ुर्गों और सुधारकोंकी लिखी हूई 100 (सो)से अधिक किताबोंका गुजराती भाषामें उमदा प्रवाही अनुवाद करके उलमा और अल्लाहवालोंके उलूम और मआरिफको आम किया और दादे तहसीन और आफरीनको हासिल किया ।और अंतरात्माके सुधारके विषयमें क़द्रपात्र इल्मी खज़ाना उपलब्ध करनेका बहुमान प्राप्त किया ।

उपरांत आपने हज़रत परदादा मियाँ (रह.) और हज़रत अबूमियाँ (रह.)के मुबारक जीवनचरित्रोंको 'मक़ामाते हिदायत' और 'मक़ामाते रहीमी' नामसे दो अलग ग्रंथोंमें गुजराती भाषामें संपादित किया । इन दोनों ग्रंथोंका 'जामिअतुल् हिदायह'के उस्तादे हदीष और सदर मुदर्रिस हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ साहिब नदवी (दा.ब.)ने उर्दू भाषामें अनुवाद किया हैं जो अब अन्क़रीब (टूंक समयमें) प्रकाशित होने जा रहा हैं ।

और अब परदादा मियाँ (रह.)की तमाम किताबोंका आपके विद्धान दामाद मुहतरम जनाब हाफिज़, क़ारी, मौलवी मुहम्मद यूनुस मुन्शी फलाहीके सहयोगसे हिन्दी भाषामें अनुवाद करनेका निर्घार किया हैं और यह प्रथम किताब अल्लाह तआलाकी तौफीक़से पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत करनेका सौभाग्य प्राप्त हुवा है।

अल्लाह तआला अपने फज़ल और करमसे इसे स्वीकार करके लोगोंके लिए लाभदाई बनाऐं ।

'अल्लाह करे फय्ज़े क़लम और ज़ियादह'

हमारे मुहतरम और मुकर्रम जनाब हाजी अब्दुस्सत्तार साहिब चोकसी, (सुरत) (दा.ब.) और जनाब हाजी मुहम्मद बशीरभाई अद्याडी (मुंबई) (दा.ब.) 'जामिअह हिदायत'की और दूसरी प्रत्येक दीनी सेवाओंके लिए हंमेशा आगे आगे रहतें हैं । इस मुबारक किताबके प्रकाशनमें भी इन दोनों महानुभावोंका भरपूर सहयोग प्राप्त हुवा हैं और भविष्यके प्रकाशनोंमें भी इसी तरह उनके सहयोगका निर्घार प्रकट किया हैं ।

अल्लाह तआला इनकी सेवाओंको स्वीकार करें और दोनों जहानमें इसका उत्तमोत्तम बदला अर्पण करे, आरोग्यमय दीर्घ आयुष्य अर्पण करे और आख़िरतमें मगफिरतका सबब बनाए । आमीन ।

12 - 04 - 1432 दुआगो सेवक,

18 - 03 - 2011,जुम्अह ***मुहम्मद फजलुर्रहीम मुजद्दिदी***

बुजुर्गोंके प्रतिभाव

(1)

''यह पुस्तक अत्यंत मुबारक और पुरनूर है । इन्शाअल्लाहु तआला इससे लोगोंको काफी फैज़ पहूँचेगा ।''

हज़रत मौलाना मुहम्मद रज़ा अजमेरी साहिब (रह.)

पूर्व शैखुल हदीष, दारुल उलूम अशरफियह, रांदेर

(2)

''यह पुस्तक अदभुत घटनाऐं और इल्हामी फुयूज़ातसे पूर्ण है''

हज़रत मौलाना अहमदुल्लाह साहिब (रह.)

पूर्व शैखुल हदीष, जामिअह हुसैनियह, रांदेर

(3)

''पुस्तकमें वर्णन किए गए स्वप्न अति उच्च कक्षाके हैं ।''

हज़रत मौलाना मुफती इस्माईल कछोलवी साहिब (म.जि.)

शैखुल हदीष व सदर मुफती, जामिअह हुसैनियह, रांदेर

खलीफए हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहिब (रह.)

(4)

''ऐसी पुस्तकके पठनसे ईमान ताज़ा होता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे प्रेममें वृद्धि होती है ।''

हज़रत मौलाना मुफती अब्दुलगनी कावीवाला साहिब (रह.)

पूर्व सदर मुफती, दारुल उलूम अशरफियह, रांदेर

अल्लाह तआलाकी हम्द व सना (स्तुति और प्रशस्ति)

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحيم

अमर्यादित प्रशस्ति वास्तवमें उस ज़ातके लिए शोभनीय है जो प्रत्येक प्रशस्तिसे उच्च अतिउच्च है ।

- जिसने महान कअ्बाकी घरतीको अपनी तजल्लीए ज़ात (निजि ज्योति)से सन्मानित करके, सर्व सृष्टिको उसकी तरफ सजदह करनेकी आज्ञा दी ।
- जिसने बय्तुल्लाह (अल्लाहका मकान अर्थात कअ्बा) और क़ल्बे अब्दुल्लाह (अल्लाहके सदाचारी बंदेके दिल)को अपना द्यर निर्घारित करके, ज़ाते बे निशानका, आलमे अस्बाब (आलोक)में मानवोंकी एकाग्रताके लिए निशान बताया ।
- जिसने प्रत्येक घनवान मुस्लिम पर पवित्र कअ्बहकी हज फर्ज़ (अनिवार्य) की ।
- जिसने अपनी ज़ातके इरफान (पहचान)में प्रत्येक आलिम (ज्ञानी) और आरिफ (ब्रह्मज्ञानी)को वह आजिज़ी (बेबसी) और हय्रत (विस्मय) और जहल (अज्ञानता) अर्पित की जो इल्म (ज्ञान)से अघिक उत्तम है ।

इं सना गुफतन ज़ मन तर्के सनास्त,
मैं जो प्रशंसा करता हूँ वह प्रशंसा न करनेके समान है ।

कीं दलीले हस्ती व हस्ती ख़तास्त ।

उसकी हस्ती संबंधी यह दलीलें, दलील न होनेके बराबर है।

हम्दे उ गर निज़्दे तु बेहतर तरस्त ।

उसकी प्रशंसा, यधपि तेरे निकट उत्तमतर है ।

लयक इं हम्द निज़्दे ऊ हम अबतरस्त ।

किंतु ऐसी प्रशंसा भी उसके पास निम्नतर है ।

हाँ दहाँ गर हम्द गोई सिपास ।

हां, मुखसे प्रशंसा करना और आभार व्यकत करना ।

हम चूना फर्जाम आँ चौपां शनास ।

उस मूर्ख चरवाहेके समान ही है ।

हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी (रह.)

हज़रत मूसा अलयहिस्सलामके समयमें एक भोलाभाला चरवाहा अल्लाहको संबोधित करके कह रहा था :

ए अल्लाह ! तुं कहाँ है ? तूं मेरे पास आ, में तेरी सेवा करुं ।
मैं तेरे फटे हुअे वस्त्र ठीक कर दूँ ।
मैं तेरे बिखरे हुअे बालोको सँवारुं, तेरे बालोमें कंगी करुं ।

{"अनुवादकीय" समाप्त}

अल्लाहकी रहमतें उतरे उन पर...

और हज़ारों हज़ार बल्कि असंख्य रहमतें अल्लाह

तआलाकी उतरे :

- हज़रत इब्राहीम अलयहिस्सलाम, प्रतिष्ठित कअ्बाके स्थापक पर
- नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्सलीम पर जिन्होंने आदरणीय कअ्बामें (अल्लाह तआलाकी) ज़ातकी तजल्ली (ज्योति)के आविष्कारकी खबर दे कर और मस्जिदोंका रुख कअ्बतुल्लाहकी तरफ करनेका हुकम फरमा कर सृष्टिको लाभान्वित किया ।

हक़ तआला अपनी रहमतों और अनवार तथा बरकतोंसे :

- आपकी आल (संतान) (रदि.) और
- अस्हाब (रदि.) और
- औलियाअल्लाह (रह.) और उलमा

रहमतुल्लाहि अलयहिमकी क़बरोंको मुनव्वर फरमाए कि उन्होंने हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलामकी पैरवी (अनुसरण) करके बय्तुल्लाहके फुयूज़ व बरकात व अनवारसे हम मुसलमानोंको आगाह (परिचित) फरमाया ।

हजकी फज़ीलत (महीमा)

इस्लाममें पांच चीज़ें दीनकी बुनियाद समान है :

(१) कलिमअे शहादत (२) नमाज़ (३) (रमज़ानके) रोज़ह
(४) ज़कात (५) हज

इन पांच अरकान (स्थंभ समान क्रियाओं)की अदायगीमें

रज़ाए हक़ और क़ुर्बे हक़ (अल्लाहकी खूशी और निकटता) अवश्य है, और हर रुकन अपने गुण और बरकतोमें विशिष्ट शान रखता है; लेकिन हजके रुकनमें बहुतसे ऐसे विशिष्ट गुण है, जिसकी वजहसे वह अपने गुण और शानमें मुम्ताज़ (अनोखा) है।

- इसकी अदायगीके लिए अपना वतन छोडना ।
- प्रियजनोंसे अलग होना ।
- माल खर्च करना ।
- तकलीफें बरदाश्त करना ।
- जिस कअ्बए मुअज़्ज़मकी तरफ सजदा करते हैं उसको (जाहिरी) आंखोंसे देखना ।
- उसके चारों तरफ तवाफ (परिक्रमा) करना ।
- रसूले पाक अलयहिस्सलातु वस्सलामके रव्ज़ए अक़्दस पर हाजिर हो कर सलातु—सलाम पढना ।
- (रोज़ए अक़्दसकी) जाहिरी आंखोंसे ज़ियारत (दर्शन) करना ।

यह सारी बातें उन चार अरकानकी अदायगीमें प्राप्त नहीं है ।

- हजके रुकनसे इल्मुल् यक़ीन (सुनी हूई अथवा जानी हूई बातका यक़ीन) ह ी नहीं बल्कि बरकतवंत मक़ामों (स्थानों)का अय्नुल् यक़ीन (आंखोंसे देखी हूई, साक्षात बातका यक़ीन) प्राप्त होता है । यह शरफ (सम्मान) खास हजके रुकनको ही प्राप्त है ।
- इसके सिवा, हजकी अदायगीमें एक विशिष्टता ऐसी है जो दूसरे किसी रुकनके अदा करनेमें नहीं है । वह यह है कि, कलिमह, नमाज़, ज़कात, रमज़ानके रोज़ह करनेसे हक़ तआला

ऐसा वाअदा फरमाता नहीं है कि हमने तुम्हारे सारे गुनाह (छोटे और बडे) माफ कर दीए ।

इसका उदाहरण देते हूए हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम फरमाते है कि :

“हाजी गुनाहोंसे ऐसा पवित्र हो जाता है कि जैसे बालक माताके पेटसे पैदा होता है ।”

इस्लामी समानता वास्तविक रूपमें

इस्लामी समानता व्यवहारमें मात्र हजकी अदायगीमें हैं । यधपि नमाज़में राजा और रंक एक सफमें एक साथ खडे रहते है; फिर भी हर एकके पोषाकमें तफावत और भेद होता है, लेकिन हजके समय यह तफावत और भेद खत्म हो जाता है ।अेहरामकी हालतमें :

- बादशाह हो या वज़ीर,
- अमीर हो या फक़ीर,
- आक़ा हो या गुलाम,
- सज्जन हो या दुर्जन,
- आलिम हो या जाहिल,
- काला हो या गोरा,
- पूर्वका निवासी हो या पश्चिमका,
- अरबी हो या हिंदी,

सब ही खुले सर और एक सफेद (श्वेत) लूंगी पहने हूए और एक सफेद कपडा (चादर) ओढे हूए होते हैं और वह कपडे भी सीए हूए नहीं होते ।

रोज़ए अक्दसकी हाजरी अनिवार्य

बयतुल्लाहकी हज असंख्य रहमतों और बरकतोंसे भरपूर है, जिसको अहले दिल, दिलकी आंखोंसे देखते हैं और उससे फय्ज़ प्राप्त करते हैं; लेकिन नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्सलीमके रोज़ए मुक्द्दस पर हाजरी देनेके बगैर हजकी पूर्णता नहीं होती । जो लोग किसी शरई उज़्र (कारण)के बगैर मक्का मुकर्रमह हाजिर हो कर मदीनह मुनव्वरह जाते नहीं हैं वे बदनसीब हैं; कयूं कि हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम फरमाते हैं कि :

- ''जिसने मेरी क्ब्रकी ज़ियारत की, उसने जैसे मुज़से मेरे जीवनमें मुलाक़ात की ।''
- जिसने मेरी क्ब्रकी ज़ियारत की, उसकी शफाअत (सुफारिश) मुज़ पर वाजिब है ।
- जिसने हज किया और उसके बा'द मेरी क्ब्रकी ज़ियारत न की, उसने मुज़ पर अत्याचार किया ।''

❍

फख्रुल् अव्वलीन वल् आखिरीन (आरंभसे अंत तकके सर्व लोगोंके लिए गर्वपात्र) रहमतुल् लिल् आलमीन (तमाम विश्वोंके लिए रहमत स्वरूप) अलयहिस्सलातु वस्सलामके इस इर्शादसे मा'लूम हुवा कि, रोज़ए पाककी हाज़री अत्यंत आवश्यक

है; और रोज़ए पाक पर हाज़िर न होनेमें दुनिया और आखिरत (आलोक और परलोक)का नुकसान है ।

खल्क़की बक्षिश कैसे होगी ?

किसीके नेक आ'माल (कर्म) ऐसे नहीं हो सकते कि वह मात्र उसकी वजहसे जन्नत (स्वर्ग)में प्रवेश करे । स्वर्गमें प्रवेश करना केवल अल्लाह तआलाके फज़्ल और हज़्रत मुहम्मद मुस्तफा अलयहिस्सलामकी शफाअत पर अवलंबित है ।

उम्मुल् मुअ्मिनीन हज़्रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हाने हुज़ूर अलयहिस्सलामसे अर्ज़ किया :

"ए अल्लाहके नबी ! खल्क़की बक्षिश कैसे होगी ?"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया :

"अल्लाह तआलाके फज़्लसे ।"

उसके बा'द दूसरी बार अर्ज़ किया :

"हुज़ूरकी बक्षिश ?"

आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने फरमाया :

"मेरी बक्षिश भी अल्लाह तआलाके फज़्लसे होगी ।"

ऐसी परिस्थितिमें भी कोई ऐसा सोच सकता है कि उसकी बक्षिश आ'माल (कर्म)की बिना पर होगी ? !

जो कोई हाजी मदीनह मुनव्वरह नहीं गया तो वह हुज़ूर

अलयहिस्सलातु वस्सलाम पर अत्याचार करनेवालोंमेंसे है, और खूद अपने हक़में भी अत्याचारी है, ऐसी व्यकितको शफाअतकी उम्मीद रखना अक़्लसे बहुत दूर है ।

जब कि हुजूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपनी ज़ियारत करनेवालेकी शफाअत अपनी कृपासे अपने उपर वाजिब फरमाए, तो उस हाजीसे बढ कर ज़्यादह खूशकिस्मत कोन हो सकता है, जो हुजूर अलयहित्तहिय्यतु वत्तस्लीमके रोज़ए अक़्दसकी हाजरीसे मुशर्रफ हो !

कयूं कि हक़ तआला हुजूर सल्लल्लाहुसे 'सूरअे वद्दुहा'के सिवा दूसरी जगहों पर भी वाअदा फरमा चुके हैं कि :

''ए अल्लाहके रसूल (सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) !
हम तुमको राज़ी (प्रसन्न) कर देंगे ।''

हक़ तआला अपना वाअदा ज़रूर पूरा फरमाऐंगे, और हुजूर अलयहिस्सलामकी शफाअतका स्वीकार करेंगे, और कभी भी अस्वीकार नहीं करेंगे । कयूं कि जब मांगनेवाला बंदेके दरवाज़ेसे खाली हाथ वापस आता नहीं है तो 'अर्हमर—राहिमीन' (सबसे अघिक दयालु और कृपालु या'नी अल्लाह तआला)के आस्तानासे रसूले पाक अलयहिस्सलाम जैसे मांगनेवाले किस तरह खाली हाथ वापस आ सकते है ?

हज़रत सअ्दी (रह.)ने सच फरमाया है :

न मानद ब इसयां कसे दर गिरव,

कोई व्यकित गुनाहमें फंसी हूई नहीं रहेगी ।

कि दारद चुनीन सैयिदे पेशरव ।

कयूं कि उनके आगे ऐसे सरदार हैं ।

अल्लाहकी रहमतसे नाउम्मीद न हो !

मुज़े जितना आनंद, उल्लास और शांति रोज़ए मुनव्वरह पर प्राप्त हुआ, सारी आयुमें ऐसी शांति किसी जगह प्राप्त न हूई। सबसे आनंदका निमित्त यह है कि मेरी सारी आयु नाफरमानी और गुनाहोंमें गुजरी है, और कोई काम अल्लाह तआला और रसूले बर हक अलयहिस्सलातु वस्सलामके यहां कुबूल होनेके लायक़ हुवा नहीं है और जो नेक काम कभी अल्लाह तआलाकी तौफीक़से हुवा है, तो मेरे गुनाहोंकी सज़ाके कारण वह नेक काम रिया और दंभके सिवा न हुवा । मैं नेकीओंसे खाली हाथ हूँ और गुनाहोंमें फंसा हुवा हूँ, इस कारण इन्साफकी दृष्टिसे मैं जहन्नमके लायक़ बना ।

लेकिन सैयिदुल् मुर्सलीन, शफीउल् मुज़निबीन, रहमतुल् लिल् आलमीन हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम (अपनी) क़ब्र शरीफकी ज़ियारत करनेवालेकी शफाअत अपने उपर वाजिब फरमाते है, तो मुज़े भी हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी शफाअत, और अल्लाह तआलाके गल्बअे रहमत और फज़्लसे बक्षिशकी उम्मीद है; और जब हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम जैसे वकील अल्लाह तआलाके सामने वकालत करने और शफाअतके लिए खडे हो जाए, तो फिर मुक़द्दमा (केस) हारनेवाला

नहीं हूँ । इस कारण अल्लाह तआलाके फज़्ल और हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी शफाअतसे मुझे जन्नतमें जानेकी उम्मीद इन्शाअल्लाहु तआला हो गई है । मेरी उम्मीदको पूर्ण करना भी उसीके हाथमें है ।

फिर अल्लाह तआलाके इस इर्शादसे मेरी उम्मीद अधिक मज़बूत हो गई :

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعاً ط اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ-

{अल्लाहकी रहमतसे नाउम्मीद न हो, बेशक अल्लाह तआला सारे गुनाहोंको माफ फरमा देंगे; सचमुच वह बडा बक्षनेवाला बडी रहमतवाला है ।} {सूरए 'जुमर' : 53}

इस कारण कि मेरे गुनाहोंका पल्ला अधिक भारी है, लेकिन रहमतके पल्लेकी तुलनामें बहुत हलका है ।

कअ्बए मुअज़्ज़मह और रोज़ए पाककी हाज़री हज़ारों रहमतें और बरकतें तथा अनवारोंसे भरपूर है; लेकिन हर व्यकितको उसकी पात्रता अनुसार अर्पित की जाती है ।

- हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलामको उनकी कक्षा अनुसार,
- अहले बय्त और सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम तथा औलियाअल्लाह रहमतुल्लाहि अलयहिमको उनकी पात्रता अनुसार और

● हम जैसे सामान्य मुसलमानोंको उनकी पात्रता अनुसार

अर्पित होता है । गर्ज़ कि अल्लाह तआलाके दरवाज़ेसे और दरबारे रिसालतसे कोई खाली हाथ वापस आता नहीं है ।

लेकिन रसूले पाक अलयहिस्सलातु वस्सलामके रोज़ए अक़्दसकी हाज़रीमें एक विशिष्टता है, जो और कोई स्थान पर नहीं है, वह यह है कि अल्लाह तआलाका मुबारक इर्शाद है :

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط (سورۂ 'حدید' : ۴)

{वह तुम्हारे साथ है, तुम जहां भी हो ।}

समाता हूँ मैं मुअ्मिनके दिलमें

लेकिन शरीअतकी आज्ञा अनुसार, हमको हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका सहवास हर समय, हर स्थान पर प्राप्त नहीं है । वह मात्र रोज़ए अक़्दसकी हाज़री पर ही अवलंबित है । मदीनह मुनव्वरहकी हाज़री एक ऐसी महान नेअमत और रहमतोंका खज़ाना है, जो और किसी स्थान पर नहीं है । वह मात्र रोज़ए अनवरके निकट ही प्राप्त हो सकती है, दूसरे स्थान पर प्राप्त नहीं होती । चाहे कअ्बए मुअज़्ज़म ही कयूँ न हो ! !

जो अल्लाह तआलाका सहवास हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामके साथ है, वह

● न ख़ानए कअ्बए मुकर्रमामें है,
● न आकाशमें है,
● न घरतीमें है,
● न किसी और जगह है ।

खानए कअ्बए मुकर्रमामें अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्ली जाहिर होती है, जिसको हम मुसलमान सजदह करते हैं, लेकिन नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी ज़ातमें अल्लाह तआलाका जुहूर अल्लाह तआलाके पवित्र नामों और सिफतोंकी तजल्ली सहित है ।

इस बातका समर्थन हदीसे कुदसीसे होता है :

'नहीं समाता मैं आकाश और घरतीमें, न नीचे
न ऊंचे, लेकिन समाता हूँ मुअ्मिनके दिलमें ।'

'मैं'से मुराद सिफतों सहित 'ज़ात' है; कयूँ कि सिफतोंका अस्तित्व ज़ातसे है; न ज़ातका अस्तित्व सिफतोंसे है । खानए कअ्बए मुकर्रमामें अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीका जुहूर है; न अय्न ज़ातका । तजल्लीका अर्थ ही किसी चीज़का दूसरी बार ज़ाहिर होना है ।

इसी लिए मौलाना रूमी (रह.) फरमाते हैं :

कअ्बह हर चंद खानए बिर्रे उस्त,
यधपि कअ्बह शरीफ बहुत खूबीओंका खज़ाना है,
खिल्कते मा नीज खानए सिर्रे उस्त ।
परंतु हमारा (मानवका) अस्तित्व भी अल्लाहके भेदका भंडार है ।

इस लिए हुजूर रहमतुल् लिल् आलमीनसे शुभतर दिल किसका हो सकता है, जिसमें अल्लाह तआलाका समावेश हो ?

सूचना : १

अल्लाह तआलाकी ज़ातका समावेश मुअ्मिनके दिलमें (होना) यक़ीने ईमानी है, अक़्ली दलीलोंसे नहीं है । इस समावेशको अल्लाह तआला ही अच्छी तरह जानता हैं, इन्सानकी अक़्ल उसको समजनेसे आजिज़ और असमर्थ है । जब कि इन्सानकी अक़्ल स्वयं अपने शरीरमें आत्माके मोजूद होनेका स्वीकार करती है; फिर भी उसको समजनेसे आजिज़ और असमर्थ है, तो मुअ्मिनके दिलमें अल्लाह तआलाकी ज़ातके समावेशको कयां समज सकता है ?

सूचना : २

मैंने जिस कअ्बए मुअज़्ज़माकी तुलनामें नबीए करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी ज़ातको महत्त्व दिया है, वह कअ्बहकी दीवार और कअ्बहकी घरतीकी तुलनामें महत्त्व दिया हैं; न अल्लाह तआलाकी तजल्लीकी तुलनामें । अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीको तो स्वयं हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम भी सजदह करते थे ।

- कअ्बतुल्लाहकी दीवार, कअ्बहकी सूरत है ।
- कअ्बहकी घरती, कअ्बह है ।
- अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्ली, कअ्बहकी हक़ीक़त है ।

अल्लाहके बा'द तू ही महान है

हुजूर रसूले अमीन अलयहिस्सलातु वस्सलामकी बुजुर्गी (महानता) और बरतरी (श्रेष्ठता) समग्र सृष्टि पर इस बातसे साफ साबित है कि,

- (चाहे) कोई असंख्य हज करे,
- (चाहे) शहीद हो या गज़वह करे,
- (चाहे) हज़ारों रका'त नमाज़ पढे,
- (चाहे) सारा माल या देश अल्लाहके मार्गमें दान करे,
- (चाहे) रमज़ानके रोज़े रखे और ज़कात दे,
- (चाहे) कुर्आने पाकका हाफिज़ हो या आरिफ (ज्ञानी) हो,

(तो भी) जिस तरह :

- हज़रत इमाम अबू हनीफा,
- हजरत इमाम शाफई,
- हजरत इमाम मालिक,
- हजरत इमाम हम्बल,
- हजरत बायज़ीद बुस्तामी,
- हजरत अबूल हसन खिर्कानी,
- हजरत जुनय्द बग्दादी,
- हज़रत शय्ख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी,
- हजरत ख्वाजा मुहम्मद नक्शबंद,
- मुजद्दिदे अल्फेसानी

वगैरा (बुजुर्गान) रहमतुल्लाहि अलयहिम अजमईन)

ऐसी बुजुर्गी होनेके बावजूद उनमेंसे कोई भी एक अदना सहाबी हज़रत अस्वद राई (रदि.)के दर्जेको पहोंच नहीं सकते । वह खय्बरके घेरेके समय हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर ईमान लाए और कोई भी अमल नमाज़, रोज़ह, हज और ज़कात वगैरह अदा न किया । (ईमान लानेके बा'द थोडे ही

समयमें) खय्बरके किलेमेंसे गुलैलमेंसे एक पथ्थर आया और हज़रत अस्वद राई (रदि.)को लगा और वह उसी समय शहीद हो गए ।

सहाबा (रदि.)की बुजुर्गी (महानता) और शरफ (सन्मान)की इस बातमें उम्मतके सारे आलिम सहमत है । सहवासकी निकटताके सन्मानकी बात इस दलीलसे बिल्कुल साफ हो जाती है कि हुजूर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम फरमाते हैं कि :

> ''मुझे अल्लाह तआलाके साथ ऐसा समय मिलता हे कि वहां कोई नबीए मुर्सल और मुक़र्रब फरिश्ता नहीं पहूँच सकता ।'

अल्लाह तआलासे अधिकतम निकट होनेके कारण ही :

- हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामका दर्जा सारी मख्लूक़से अफज़ल और बहेतर हैं; और
- हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी नज़दीकी तथा सहवासके कारण सहाबा रिदवानुल्लाहि तआला अन्हुम अजमईनका दर्जा सारी उम्मतसे अफज़ल हैं ।
- इसी तरह जो हाजी मदीनह मुनव्वरह नहीं जाते, उनकी तुलनामें जो हाजी रोज़ए पाक पर हाज़िर होते हैं, उनके फर्क़को समज लेना चाहीए ।

इस लिए हाजी साहिबोंको :

- रहमतुल् लिल् आलमीन (सारे विश्वोंके लिए रहमत),

- शफीउल् मुज़्निबीन (गुनहगारोंकी शफाअत करनेवाले),
- अनीसुल् गुर्बा व मसाकीन (गरीब और मिस्कीनोंके सहायक)

अलयहिस्सलातु वस्सलामके रोज़ए पाक पर ज़रूर हाज़िर होना चाहीए कि इस तरह हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी शफाअतसे फायदा उठा सकें; और हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम पर अत्याचार करनेवालोंमें शुमार न हो ।

जिस तरह नमाज़में सजदह नमाज़की आत्मा है, इसी तरह रोज़ए अनवरकी हाज़िरी यह हजकी आत्मा है ।उसको वह जानता हैं जिसको अल्लाहने ईमानकी आत्मा अर्पण फरमाई है ।

अल्लाह तआलाके दरबार और रिसालत पनाह अलयहिस्सलातु वस्सलामके दरबारसे कोई खाली हाथ वापस आता नहीं है; हर एकको उसकी हेसियत अनुसार अर्पण किया जाता हैं; जैसा कि उपर वर्णन हो चुका हैं ।

फज़्ले ख़ुदा और करमे मुस्तफा (सल.)

लेकिन कई बार किसी बंदे पर अल्लाह तआलाका फज़्ल और नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी इनायत (कृपा) और अता (बक्षिश) ऐसी होती हे, जो तालिबकी हेसियतसे बहुत अधिक और उम्मीदसे अतिविशेष होती हे ।

हजरत शाह अब्दुलहक़ साहिब मुहद्दिस (रह.) और हजरत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस दहेल्वी (रह.) जब मक्का

मुअज़्ज़मह और मदीनह मुनव्वरहमें हाज़िर हुए उस समय उन पर जो जो फज़्ले खुदा और करमे मुस्तफा अलयहिस्सलाम हुए, उसके संबंघित उन्होंने लोगोंके फायदेके लिए दो किताबें लिखी ।

- हजरत शाह वलीउल्लाह साहिब (रह.)ने **'फुयूजुल् हरमैन'** और दूसरी **'दुर्रुस्समीन फी मुबश्शिरातिं नबीय्यील् अमीन'** किताब लिखी और
- शाह अब्दुल्हक़ साहिब (रह.)ने **'जजबुल् कुलूब फी दियारिल् महबूब'** किताब लिखी ।

यह किताब तथा दूसरी किताबोंके अभ्यास और पठनसे यह बात मा'लूम हूई कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपने दर्शनार्थी अतिथी पर कैसे कैसे करम फरमाते हैं ।

इन बुजुर्गोंकी किताबें देखनेके बा'द मुज़े भी शोख हुआ कि इन बुजुर्गोंका अनुकरण करके मैं भी फज़्ले खुदा और करमे मुस्तफा अलयहिस्सलातु वस्सलामको जाहिर करूँ कि जिससे हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके उम्मती इस किताबको पढ कर हज्जे बयतुल्लाह और रवज़ए रसूलुल्लाह अलयहिस्सलातु वस्सलामकी हाजरीके लिए प्रयत्नशील हो कर मंज़िले मक्सूद (लक्ष्यस्थान) तक पहूँचे; कयूँ कि हम मुसलमानोंकी अभी जो अघोगति और अवदशा हूई हैं, वह ईमानकी कमज़ोरी और नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी मुहब्बत और इत्तिबाअ (अनुसरण)की कमीके कारण हूई हैं । और उसमें असल बुनियादी वस्तु रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बत हैं।

मुहब्बत ही एक ऐसी वस्तु हे कि जो कठिनसे कठिन कामको भी कठिन समजती नहीं हैं; और मुहब्बत न हो तो हर सरल काम भी कठिन मा'लूम होता हैं । उसके सुबूत (प्रमाण)के लिए हदीस शरीफ मोजूद हे :

अमीरुल् मुअ्मिनीन हज़रत उमर खत्ताब (रदियल्लाहु अन्हु)से हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम फरमाते हैं कि :

"हे उमर (रदि.) ! जब तक तुम्हारे दिलमें मेरी मुहब्बत तुम्हारे माता, पिता, संतान, माल, जानसे अघिक न होगी, तुम्हारा ईमान परिपूर्ण न होगा ।"

अपने दिलोंमें किसकी मुहब्बत अधिक है ?

हम मुसलमान अपने गिरेबानमें मुख डाल कर देखें कि अपने दिलोंमें हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी मुहब्बत अघिक है अथवा माता, पिता, संतान, माल और जानकी ? बल्कि मैं तो कहता हूँ कि अपने दोस्तोंकी मुहब्बत अपने दिलोंमें इतनी अघिक हैं कि जितनी मुहब्बत हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके साथ नहीं है । इसका सुबूत (प्रमाण) यह है कि हम कई कई घंटे दोस्तोंकी सुहबतमें गुज़ार देते हैं फिर भी हम उक्तातें नहीं, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर पंद्रह (१५) मिनट भी दुरूद शरीफ पढना कठिन लगता हैं ।

दोस्तोंकी शकल, सूरत, आदत जो चाहे शरीअतके विरुद्ध हो फिर भी उसका अनुकरण करते हैं, और हुजूर सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लमका अनुकरण और अनुसरण करते नहीं हैं; तो फिर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बतका दा'वा करना जूठ नहीं है तो कया है ?

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (ال عمران : ۱۳)

{कह दो अगर तुम अल्लाहसे मुहब्बत रखते हो तो मेरी राह चलो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा ।}

वास्तवमें, सच बात यह है कि नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीमकी मुहब्बतमें जितनी कमी हूई है इतनी ईमानमें कमज़ोरी आई है और इसी तरह इस्लामकी हर प्रगतिमें, सम्मानमें और राहतमें कमी उत्पन्न हो गई है ।

अल्लाह तआलाका इर्शाद है :

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ط

{और सुस्ती न करो और अफसोस भी मत करो और अगर तुम ईमान रखते हो तो तुम ही गालिब (विजयी) रहोगे ।} {सूरए 'आलि इमरान' : 139}

यह पुस्तक लिखनेका कार ण

मैंने यह पुस्तक इस लिए लिखी है कि मुसलमान इस पुस्तकको पठन करके अपने सुंदर दोस्त और शफीक़, कृपालु और दयालु नबीए करीम अलहिस्सलातु वस्सलामसे मुहब्बत पैदा करे कि जिनकी मुहब्बत और कृपा तथा करमका समर्थन अल्लाह

तआलाने कुर्आने मजीदमें फरमाया है :

“ए ईमानवालो ! जितना तुम अपने प्राणोंको अज़ीज़ और प्रिय समजते हो उससे अधिकतर रसूले करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीम तुम लोगोंको प्रिय समजते है।”

अनुभव बतलाता है कि जब तक तुम खूशहाल हो, हरेक गैर, पराया और अजनबी भी तुम्हारा दोस्त बन कर रहता है; और नादारी तथा गरीबीकी स्थितिमें अपने भी पराये जैसे हो जाते है ।

लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उस समय भी तुम्हारे दोस्त रहते हैं कि जब तुम्हारे प्रियजन और दोस्त तुमसे अलग हो जाते है ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी शान यह है :

‘मुहिब्बुल् फु—क़राइ वल् गु—रबाइ वल् मसाकीन’

(आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम फक़ीरों (रंक), गरीबों और निराधार लोगोंसे मुहब्बत करनेवाले हैं ।)

आगे चल कर मैं हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी अपने उम्मती महेमानोंकी महेमाननवाज़ी और कृपा तथा करमका हाल बयान करूँगा । लेकिन वह बयान कोई घोका अथवा घमंडके कारण है ऐसा मान न लेना, बल्कि आभार व्यकत करनेके लिए और नेअमतोंका शुक्र अदा करनेके लिए है कि जिससे कृपालुओंकी कृपाको सुन कर मदीनहवालोंकी मुहब्बतमें और रव्ज़ए पाकके दर्शनके शोक़में वृद्धि हो, जिसके बदलेमें दोनों जगतमें खूश और आबाद रहे और यह अवदशा तथा

अघोगतिमेंसे निकल कर उत्थान और उन्नतिकी चरम सीमाको पहूँचें ।

गैबी तक़ाज़ा

मैंने यह पुस्तक खूद नहीं लिखी, और न उस इलाही नेअमतको जो मुज़ गुनहगार और अपराघी पर हूई, उसको जाहिर करना चाहा, लेकिन गय्बसे बार बार तक़ाज़ा हुआ और यह आयते शरीफा :

وَاَمَّا بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثۡ ۔ (سورۂ 'ضحیٰ' : ۱۱)

{और अपने रबकी नेअमतोंका ज़िक्र करो ।}

की आवाज़ कानोंमें आई ।

यह बात भी नज़र समक्ष है कि हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीमने इरशाद फरमाया कि :

"जो व्यकित मेरे बारेमें कोई हाल अथवा स्वप्न गलत बयान करेगा, वह अपना ठिकाना जहन्नममें बनाएगा ।"

बुद्धिशाली मानवी दुनियाके मुआमलेमें भी जूठ बोलना नहीं चाहता और उसको बुरा समज़ता है, तो मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके बारेमें कया जूठ बोलेगा ?

मैंने इस पुस्तकका नाम 'फुतूहुल् हरमय्न फी मुबश्शिराति रसूलिस्सक़लय्न' रखा है ।

अल्लाह तआलासे दुआ है कि इस पुस्तकको कुबूल फरमा कर मुसलमानोंको लाभ पहूँचाए और मेरी मुक्तिका माध्यम बनाए और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी परिपूर्ण मुहब्बत अर्पण करे कि जो परिपूर्ण ईमान प्राप्त करनेका सुंदर माध्यम है ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बत परिपूर्ण ईमान कयूँ ?

सवाल :

ईमानकी ता'रीफ (व्याख्या) यह है कि :

- ज़ाते हक़ गय्बुल् गय्ब पर ईमान लाना,
- फरिश्तों और रसूलों पर ईमान लाना,
- आसमानी पुस्तकों और क़ियामत पर (ईमान लाना) और
- अज़ाब तथा सवाब, जन्नत (स्वर्ग), जहन्नम (नर्क)का यक़ीन करना है ।

लेकिन इस हदीष शरीफमें मात्र नबीए करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बत होना ईमानकी परिपूर्णता है ! यह शंका किस तरह दूर हो सके ?

जवाब :

जब हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामको अल्लाह तआलाके रसूल होनेका स्वीकार कर लिया, तो जिस तरह आप सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लमका यक़ीन जिन चीज़ों पर है, उन सर्व बातों पर उसका (ईमान लानेवालेका) यक़ीन सर्व प्रथम हो गया ।

अब मैं हाजरीका संक्षिप्त वर्णन प्रथम मक्का मुअज़्ज़महका लिखता हूँ और बा'दमें मदीनह मुनव्वरहका लिखूँगा ।

मक्का मुअज़्ज़महकी हाज़री

मैं 23, ज़िल्‌कअ्‌दह, 1365 हि.स.(19, अकटुबर, 1945, जुमेरात)के दिन मुंबईसे मग्‌रिबके समय 'खुसरो' जहाज़में चंद मित्रोंके साथ मक्का मुअज़्ज़मह रवाना हुवा ।

महासागरमें तुफान

हज़रत (रह.)के हजके साथी मुहतरम अब्दुल अज़ीज़ भाई टेलर सूरती फरमाते थे कि :

हजको जाते समय रास्तेमें महासागरमें तुफान शुरू हुआ । जहाज़ हिंडोलेकी तरह डोलने लगा । सब प्रवासी गभरा गअे । अब कया होगा ? मगर हज़रत साहिब (रह.) बिल्‌कुल स्वस्थ थे।

आपने फरमाया कि,

''अन्नके आटेको पानीमें गुँध कर टिकिया बना कर हमारे पास लाओ ।''

आज्ञानुसार टिकिया बना कर हज़रतकी सेवामें प्रस्तूत कि

गई ।

कुछ पढ कर आपने टिकियाँ पर दम किया और फरमाया कि :

"इसे सागरमें फेंक दो ।"

आज्ञानुसार टिकियोंको सागरमें फेंकते ही तुफान थंभ गया।

सब प्रवासीओंकी चिंता दूर हो गई ।

{"अनुवादकीय" समाप्त}

नवें दिन जिद्दह पहूँचा । दूसरे दिन जिद्दहसे मक्का मुअज़्ज़्मह पहूँचा ।आठवी ज़िल्हिज्जहको मक्का शरीफसे 'मिना' जानेके लिए लगभग दिनको नव बजे पैदल रवाना हुआ । (याद रहे कि उस समय हज़रत साहिब (रह.)की मुबारक उ म्र 95 (पंचानवे) साल थी ।) गरमीके कारण छाता ओढ़ लिया था । 'मिना' मक्का मुअज़्ज़्महसे लगभग तीन कोस (अंदाज़न् साडे सात कि.मी.) दूर है । मार्गमें निराधार तकरूनी (अफ्रीक़ाके) लोग, जो बडी संख्यामें हजके शव्क़में अरफातकी ओर चलते, दोडते हुए जा रहे थे । (उनको ऐसी स्थितिमें देखा) कि :

- उनकी बगलमें बालक है,
- सर पर प्रवासका ज़रूरी सामान है,
- एक हाथमें दूसरे बालकका हाथ है,
- गरमीकी तेज़ी है,
- गरम रेत है, और
- खुले सर हैं ।

उनको देख कर मुझे संपूर्ण यक़ीन हो गया कि सचमुच

यही लोग हाजी हैं और हाजी कहनेके लायक़ हैं । हमारे जैसे आरामतलब लोगोंका हज हजकी सूरत है और उनका हज हक़ीक़तमें हज हैं ।

उस समय मुज़े मेरी हजकी हक़ीक़त मा'लूम हूई और मैंने अल्लाह तआलाके दरबारमें दुआ की के :

"ए मेरे अल्लाह ! इन हाजीओंकी जूतीओंके सदक़ेमें हम जैसे नामके हाजीओंके हजको कुबूल फ़रमा !"

देह काला, दिल सफेद

कुछ महिलाऐं उन लोगोंमें ऐसी भी थीं कि जिनके दो—दो, तीन—तीन महीनेके बालक उनकी गोदमें थें और गरमी तथा प्यासके कारण उन बालकोंके मुँह सुख चुके थे और उन बालकोंने गरमी और प्यासके कारण मुँह खोल दीए थे । मेरे पास अनार थे, मैंने अनारके दानेका रस बालकोंके मुँहमें टपकाया, तो उनको थोडी राहत हूई । उन तकरूनी (अफ्रीक़ाके) लोगोंके देह काले थे, लेकिन दिल सफेद थे ।

अल्लाह तआला उन लोगोंके तुफय्लसे दोनों जगतमें मेरे उपर फज़्ल और कृपा फरमाए और नेक अंजाम करे ! आमीन । बि हक़्क़ि साहिबे सूरए ताहा व यासीन !

दूसरे कई तक़रूनी (अफ्रीक़ाके) लोग अफ्रीक़ासे देढ—देढ, दो—दो सालसे पैदल प्रवास करके हजके शौक़में मक्का मुअज़्ज़मह

और मदीनह मुनव्वरह हाज़िर होते हैं; इसलिए उन लोगोंके हजकी तुलनामें हम लोगोंका हज कया हक़ीक़त रखता हैं ?

हजके बाक़ी अरकानकी परिपूर्णता

अरफातसे हजके बा'द मिनामें तीन दिन निवास किया और मिनाके इस निवासके दरमियान ही मक्का मुअज़्ज़मह हाज़िर हो कर खानए कअ्बए मुअज़्ज़महका तवाफ (परिक्रमा) किया । सफा–मरवह आदिके अहकाम अदा करके सरके बाल मूँडवाए, गुस्ल किया, पोषाक बदला, अेहराम खोल दिया ।

हाजी इस्माईल साहिब सूरती

मक्का मुअज़्ज़मह लगभग पोने दो मास रह कर मदीनह मुनव्वरह हाज़िर हुवा और मदीनह पाकमें लगभग साडे तीन मास हाज़िर रहा । मेरे मित्र हाजी इस्माईल साहिब टेलर सूरती और उनके घरकी महिलाओंने भी हजके प्रवासके दिनोंमें मेरी बहुत सेवा की और हर प्रकारका मुज़े आराम पहूँचाया ।

अल्लाह तआला उन सबको दोनों जगतमें अज्र (भलाईका बदला) दे और आनंदित तथा आबाद रखे ! आमीन बि हक़्क़ि सैयदिल् मुर्सलीन अलयहिस्सलातु वस्सलाम)

स्वप्न साकार हुआ

हाजी इस्माईल साहिबने मुझे ऐसा मकान ले दिया कि, उसकी एक तरफका हिस्सा हरम शरीफमें था और दूसरी तरफका हिस्सा हरम शरीफसे बाहर था । उस मकानमें निवासके दरमियान हर समय खानए कअ्बह आंखोंके सामने रहता था । मेरी आंख खानए कअ्बए मुअज़्ज़महके दर्शनसे हर समय मुशर्रफ रहती थी और कअ्बए मुअज़्ज़महका वह हिस्सा मेरे सामने रहता था, जिसको मैं जयपूरमें बीस बरस पहेले स्वप्नमें देख चुका था कि मैं कअ्बए मुहतरमाका परदा पकड कर खडा हूँ । उस समय मेरा सीना फटा और उसमेंसे सूर्य निकला, जिसने बुलंद हो कर बहुत सी धरतीको प्रकाशित किया ।

हमारी चाहतका मकान मिल गया

मर्हूम जनाब हाजी इस्माईल भाई टेलर, सूरतीके छोटे भाई मुहरतम जनाब हाजी अब्दुल् अज़ीज़ भाई टेलर फरमाते थे कि :

हम मक्का शरीफ पहूँचे, एक मकानमें हंगामी निवास करके दूसरे अच्छे मकानकी तलाश शुरू की । हज़रत हमारे साथ थे, इस लिए ऐसी फेसीलिटी (सुविधा)वाला मकान तलाश करते थे जो :

- न दूर हो,
- न उपरके माले पर हो ।
- विशाल ओर अधिक कमरेवाला हो, जिसमें हज़रत ओर हम दोनों भाईओंके परिवार अलग कमरेमें रह सके ।

मकान ढूंढते दो दिनका समय निकल गया, लेकिन ऐसी

फेसीलिटी (सुविघा)वाला मकान नहीं मिला ।

हज़रतने पूछा कि : ''मकान नहीं मिलता ? ''

हाजी इस्माईल भाईने कहा कि :

''हां , हज़रत ! ऐसा ही है । ''

हज़रतने फरमाया कि :

''मीज़ाबे रहमतके सामने मकान खाली हे, वहां तलाश करो ! ''

हमने वहां जा कर देखा तो हक़ीक़तमें हमको जैसा चाहिए ऐसी फेसीलिटी (सुविघा)वाला मकान खाली था । नीचेके माले पर हज़रतका कमरा और उपरके माले पर तीन कमरे तथा कीचन (रसोईघर) था !

हमने हज़रत साहिबसे पूछा कि :

''आपने किस तरह बतलाया कि यह मकान खाली है ?''

आपने फरमाया कि :

''बहुत साल पेहले मैंने यह स्वप्न देखा था कि मैं हजके लिए आया हूँ । यह मकान और यह कमरा जिसमें हम सब बैठे हैं, वह सर्व मैंने उस स्वप्नमें देखा था । ''

मिनासे अरफात भी पैदल आए

मुहतरम हाजी अब्दुल् अज़ीज़ भाई टेलर, सूरती साहिब दूसरी एक घटना इस तरह बयान करते थे :

मिनासे अरफात हमने बसमें जानेका निर्णय किया, लेकिन हज़रतने पैदल चल कर जानेको पसंद किया ।

हाजी इस्माईलभाईने कहा कि :

"हज़रत ! अरफातमें हजारों खैमों (तंबू)में आप हमको किस तरह तलाश करोगे ?"

हज़रतने फरमाया कि : "मैं आ जाऊँगा ।"

हम अरफात बसमें पहूँचे और हमारे खैमे (तंबू)में हम अभी हमारा सामान रखते थे कि बाहरसे हज़रतने आवाज़ दी !

हाजी इस्माईल भाईने बाहर जा कर देखा तो हज़रत खडे थे ।

हज़रतने फरमाया कि :

"हाजी इस्माईल ! यह प्रथम ही खैमा (तंबू) है जहां मैंने आवाज़ दी ।"

{"अनुवादकीय" समाप्त}

दुरूद शरीफकी फज़ीलत

कोहे यलम्लम नामका स्थान जहांसे हाजी जहाज़में अेहराम बांधते हैं, वहां अेहराम बांधनेके बा'द मैंने अपने सर्व वज़ाइफ जिसको मैं लगभग चालीस–पचास सालसे पढता था, उसको मैंने छोड दिया और मात्र दुरूद शरीफ हर मौके पर और

हर स्थान पर पढता रहा; यहां तक कि खानए कअ्बए मुअज़्ज़महके तवाफ (परिक्रमा)के समय भी यही दुरूद शरीफका विर्द रखा और मदीनह पाकमें तो यही होना चाहीए था । वापस होते समय जब तक जिद्दहमें रहा, यही नियम रहा । जब जिद्दहसे (हिन्दुस्तान आनेके लिए) जहाज़में सवार हुवा, तबसे अपने वज़ाइफ फिरसे शुरू कर दीए ।

मुज़ पर जो कृपा हूई वह मैं दुरूद शरीफका ही वसीला समजता हूँ । मैं यह जानता था और जानता हूँ कि मेरा मुंह इस लायक़ नहीं है कि इसमेंसे निकले हुए शब्द कुबूल हों; लेकिन दुरूद शरीफ ऐसी चीज़ है कि जिसे हक़ तआला हर स्वरूपमें और हर मुंहसे अपनी कृपासे कुबूल फरमा लेते हैं ।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहिब जो हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस दहेल्वी रहमतुल्लाहि अलयहके मानवंत पिता हैं, (वह भी) यही फरमाते हैं कि :

> ''फक़ीरने जो कुछ प्राप्त किया हैं, वह दुरूद शरीफकी बरकतसे (प्राप्त किया हैं ।) ''

मैं भी इसका स्वीकार करता हूँ कि मुज़ गुनहगार, नाफरमानको जो कुछ भी अर्पण किया गया हैं वह मात्र अल्लाह तआलाका फज़्ल, मुस्तफा अलयहिस्सलातु वस्सलामका करम और महान पीरोंकी दुआ और दुरूद शरीफका सदक़ह है ।

काला दिल, काला गिलाफ

जब तक मैं मक्का मुअज़्ज़महमें और हरम शरीफमें हाज़िर रहा, अपना काला दिल कअ्बए मुअज़्ज़महके काले गिलाफवालेके सामने और सफेद दाढी कअ्बहवालेके सामने पेश करके रहमतका उम्मीदवार रहता था और यह अर्ज़ करता रहा कि:

‘‘मेरे काले दिलको मअ्रिफतके नूरसे प्रकाशित फरमा ! और मेरी सफेद दाढीकी लाज तेरे हाथमें है और मेरी यह सूरते हजको अपने फज़्लसे और जिनका हज तूने कुबूल फरमाया हैं, उनके सदक़ेमें कुबूल फरमा ! ’’

इसी फिक्रमें रहता था कि एक दिन अर्शे मुअल्लासे यह आवाज़ आई :

وَيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْراً عَزِيْزاً۔ (سورۂ ‘فتح’ :٣)

{और अल्लाह तेरी जबरदस्त मदद करे ।}

इस गय्बी आवाज़से दिलको शांति और राहत हूई और यह ख्याल हुवा कि हक़ तआलाने अपने फज़्ल व करम तथा अपने मक़बूल बंदोंके तुफय्लमें मेरा हज कुबूल फरमा लिया और कुबूलियतकी उम्मीदसे दिलको कुछ शांति और राहत हूई । यह स्थिति ऐसी थी कि न उसको अय्न बेदारी (जाग्रति) कह सकते हैं, न अय्न स्वप्न कह सकते हैं ।

कारचोबी ज़री, काला पोशाक

एक दिन मैंने देखा कि मुज़े काला पोशाक अर्पण किया

गया और मुझे पेहनाया गया ।उसके आगेके हिस्से पर कारचोबी ज़री काम किया हुवा था ।

फूलोंका हार और गुच्छ

एक दिन देखा कि मुझे अत्यंत खुश्बुदार हार पेहनाया गया और हाथमें फूलोंका गुच्छ दिया गया ।

हार पे हार

एक दिन देखा कि एक बहुत बडा फूलोंका हार पेहनाया गया और दूसरा हार गलेमें पेहनाया जा रहा हैं ।

चाय

एक समय यह देखा कि मुझे मेहमानदारीके तरीक़े पर चाय पिलाई गई ।

नूर देखा

एक दिन यह देखा कि कअ्बए मुअज़्ज़मह पर एक नूर प्रदर्शित हुवा है । वह नूर ऐसा है कि उस नूरकी किसी भी चीज़के ज़रीए मिसाल नहीं दे सकते । वह नूर (इस आयते शरीफा)के अनुरूप है :

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ ج وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

{कोई चीज़ उस जैसी नहीं है और वही हर बातका सुननेवाला देखनेवाला है ।} {सूरए 'शूरा' : 11}

कदाचित उस नूरको मैंने दिलकी आंखोंके ज़रीए देखा है, ज़ाहिरी आंखों तजल्लियातके अनवारको अथवा हक़की तजल्लियातके प्रतिबिंबको नहीं देख सकती । अल्लाह तआलाने मेरे यक़ीनमें वृद्धि करनेके लिए मुज़को उससे मुशर्रफ फरमाया है, कयूँकि प्राथमिक कक्षाके सामान्य तलबा (जिज्ञासु)के यक़ीनको ऐसी ही स्थिति और घटनाऐं दिखा कर मज़बूत किया जाता हैं; और उच्च कक्षाके महात्माओंको ऐसी चीज़ें नहीं दिखाई जाती, उनको मात्र यक़ीनकी ठंडक ही अर्पण की जाती हैं, जिसको ईमान बिल् गय्ब (गय्बकी अदृश्य चीज़का यक़ीन) कहते है ।

कमाल (परिपूर्णता)का सुबूत कया है ?

अल्लाह तआलाके विशिष्ट लोगोंको जो यक़ीन दिया जाता है वह अय्नुल् यक़ीन (आंखसे देखी हूई चीज़का यक़ीन)से कई दर्जा श्रेष्ठतर हक्कुल् यक़ीन दिया जाता है और यक़ीनकी परिपूर्णता ही कमालका सुबूत (प्रमाण) है ।

जैसा कि हज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फेसानी रहमतुल्लाहि अलयहिने हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि अलयहिसे अर्ज़ किया कि :

"विलायतकी परिपूर्णताका सुबूत (प्रमाण) कया है ? "

तो हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाहि अलयहिने जवाबमें फरमाया :

"यक़ीनतर कामिलतर" (जिसका यक़ीन जितना अधिक होगा, इतना कामिल अधिक होगा) ।

और यही यक़ीनकी परिपूर्णता सहाबा रिदवानुल्लाहि तआला अलयहिम अजमईनको ईमान लानेके बा'द रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी सुहबतमें कुछ क्षणमें प्राप्त होती थी, जिसके कारण सहाबा सर्व उम्मत पर श्रेष्ठता प्राप्त कर गए ।

का'बा शरीफकी तरफ सजदह कयूं ?

लेकिन अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्ली जो ख़ानए कअ्बए मुअज़्ज़मह पर जल्वहगर है, उसके फायदेसे आम हो या खास, कोई वंचित नहीं रहता । उसको कोई महसूस कर लेता है और कोई महसूस नहीं करता । और यही अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीकी निकटताके कारण कअ्बहकी दीवार और कअ्बए मुअज़्ज़महकी धरतीको शर्फ और महानता प्राप्त है, अगर किसी समय कअ्बए मुअज़्ज़महकी दीवार गिर पडे, तो भी कअ्बए मुअज़्ज़मह इसी तरह कअ्बह ही रहेगा; कयूं कि अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीका ज़ाहिर होना कअ्बए मुअज़्ज़महकी धरती पर है और धरती अपने स्थानसे हट नहीं

सकती । और कअ्बहकी घरती ही को कअ्बह कहते है; और अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीको हक़ीक़ते कअ्बह कहते हैं, जिसको हम सजदह करते हैं ।

आत्माको पहचान सकते नहीं, तो सर्जनहारको कया समजेगें ?

सवाल :

अस्बाबके इस जगतमें नामघारी जितनी भी चीज़ें हैं उसका ज्ञान (जानकारी) अवश्य हैं । (तो फिर) ख़ानए कअ्बहमें अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीके जो अनवार हैं उसका ज्ञान (जानकारी) भी होना चाहीए ? !

जवाब :

इस जाहिरी जगतमें जो चीजें हैं उसका (ही) इदराक (जानकारी) इस जाहिरी जगतकी सिफात (ज्ञानेन्द्रिय) कर सकती हैं, आलमे गय्ब (अदृश्य जगत)की चीजोंका अथवा अनवारका इदराक (जानकारी) यह जाहिरी सिफात नहीं कर सकती ।

उदाहरणके तौर पर ख़ानए कअ्बहकी दीवार पथ्थरकी है और पथ्थरमें आग अवश्य है; फिर भी पथ्थरकी आग न हाथको जला सकती है; न उसका प्रकाश नज़र आता है, न वह आग पथ्थरको पानीमें डालनेसे बुज़ जाती है, हालां कि आग उसमें मोजूद है । फिर भी समजशकितके गुण और दर्शनशकितके गुण

इसके इदराक (जानकारी)से वंचित है, लेकिन इल्मुल् यक़ीन उसके अस्तित्वका स्वीकार करता हैं । जब कि कअ्बए मुअज़्ज़महके पथ्थरके गुण 'आतिशे संग' (पाषाण अग्नि) हमारे ज्ञानसे अतिउच्च है, तो अल्लाह तआलाके नूरका ज्ञान, अेहसास जाहिरी सिफात किस तरह कर सकती है ?

उदाहरणके तौर पर हम सब अपने शरीरमें आत्माके अस्तित्वका स्वीकार करते हैं, लेकिन हमारी सर्व सिफात आत्माके ज्ञान और अेहसाससे असमर्थ और अशकितमान है । जब हम अपनी आत्मा जिससे हमारे अस्तित्वकी हर सिफत, हर अंश जीवंत है, उसको ही नहीं समजे, तो आत्माके सर्जनहारको हम कया समजेंगे ?

अम्बिया अलयहिमुस्सलामकी खबरें सच्ची कयूँ ?

सवाल :

हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलियाअल्लाहने हक़के अनवारके बारेमें जो कुछ ख़बरें दी हैं, वह इस आलमे दुनियामें दी है; और यह आलम उस आख़िरतके आलमको अथवा उस आलमके सर्जनहारको समज नहीं सकता, तो बुजुर्गोंने जो खबरें आलमे गय्ब (अदृश्य जगत)की अथवा अल्लाह तआलाकी ज़ात और सिफातकी तजल्लीकी दी हैं, वह

किस तरह सच्ची हो सकती हैं ?

जवाब :

बुजुर्गो और हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलामने जो कुछ जाहिर फरमाया है, (और) जिस पर हमारा यक़ीन है, वह सिफतें, शारीरिक जानकारीसे नहीं फरमाई, बल्कि आत्मज्ञान और अनवारे क़ल्बके कारण फरमाई हैं, जिसका संबंध सर्जनहारकी ज़ातसे हैं ।

इस बातके बारेमें सर्व मज़हब सर्वसंमत हैं कि दिल ही हक़ीक़तोंका भंडार और अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीके अनवारका ख़ज़ाना और ख़ान हैं ।

यह बात नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामके इर्शादसे साफ ज़ाहिर है :

"डरो मुअ्मिनकी फिरासत (पारदर्शिता)से, कि निशंक वह देखता है अल्लाह तआलाके नूरसे ।"

इस लिए हज़राते अम्बिया अलयहिस्सलातु वस्सलामने जो कुछ फरमाया हैं अथवा औलियाअल्लाहने दिलके नूरसे अर्थात हक़के नूरसे फरमाया हैं, वह आलमे गय्ब और अल्लाह तआलाकी ज़ात तथा सिफातसे संबंध रखता हैं ।

अल्लाह तआलाके नूरके उतरनेके लिए कअ्बह शरीफकी पसंदगी क्यूँ ?

सवाल :

अल्लाह तआलाकी पैदा की हूई घरती अति विशाल है । तो फिर ख़ानए कअ्बए मुअज़्ज़महकी विशिष्टता अल्लाह तआलाकी ज़ातकी तजल्लीके ज़ुहूर (प्राकटय)के लिए क्यूँ ?

जवाब :

अल्लाह तआलाका बनाया हुआ मानवका शरीर अति विशाल है, लेकिन सर्व मज़हबके नज़दीक 'दिल' ही खानए खुदा और तजल्लीगाह तथा असरारे मअ्‌रिफते हक़की जगह मानी गई हैं । जिस तरह अल्लाह तआलाने अपनी कुदरतसे दिलको अपनी मअ्‌रिफत और अपनी निकटताके लिए पसंद फरमाया हैं, इसी तरह अल्लाह तआलाने खानए कअ्बहकी घरतीको अपनी तजल्ली और अनवारके नुज़ूल (उतरने)के लिए पसंद की है ।

लिजिए, आप इससे स्नान कर लिजिए !

एक बार स्वप्नमें देखा कि, मैं मदीनह मुनव्वरहमें रव्ज़ए अक़्दस पर हाज़िर हूँ और वहां दूसरे भी खास लोग हाज़िर हैं । रव्ज़ए पाककी तरफसे एक बुज़ुर्ग तशरीफ लाए । उन्होंने मुझे और दूसरे जो क़रीबन पांच–छे व्यकित थे, उनको गंदला जैसा पानी दे कर कहा कि :

यह पानी रव्ज़ए पाकके गुस्लका है; आप इससे गुस्ल कर लो ! इस लिए मैंने और दूसरे कई लोगोंने जिनको (पानी) अर्पण

किया गया था, अपने सर पर उस पवित्र पानीको डाल दिया । उस पानीसे हमारे वस्त्र और शरीर सरसे पांव तक तर हो गए ।

हुज़ूर (सल.)का (मुबारक) उलूश खाओ

इसके बा'द उन बुजुर्गने हम सबको एक–एक रकाबी अर्पण की, जिसमें पकाए हूए अति उमदा चावल थे ।

उसके बा'द फरमाया कि :

यह चावल खा लो । यह हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामका 'उलूश' (खानेके बा'दका बचा हुवा अन्न) है ।

मैंने देखा कि बेशक, वह चावल रकाबीमें ऐसै ही मा'लूम होते थे, जैसे खानेके बा'द बचे हो, और उसमें कई जगह पर निवाले लेनेकी निशानी थी ।

उसके बा'द अर्शे मुअल्लासे आवाज़ आई :

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ

{खूशखबरी देता है उनको परवरदिगार उनका अपनी तरफसे कृपाकी और रज़ामंदीकी तथा ऐसै बागोंकी जिनमें उनको आराम है हंमेशाका ।} {सूरए 'तव्बह' : 21}

अम्बिया अलयहिमुस्सलामके सरदार, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुमके सरदारके साथ

एक दिन मैं हरम शरीफमें बैठा हुवा था कि स्वप्नकी अथवा गुनूदगी (तंद्रा)की स्थितिमें यह देखा कि :

हुजूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम और अमीरुल् मुअ्मिनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु मेरी तरफ तशरीफ ला रहे हैं ।

'हे अभिलाषी, यहाँ आओ ।'

यह स्थिति देख कर यह मा'लूम हुवा कि बेशक अल्लाह तआलाकी रहमत अपराधीओंको ढूँढती फिरती हैं । जब मुज़ जैसे गुनहगार और अपराधी पर कृपाकी यह स्थिति है, तो उसके मक़बूल बंदों पर न मा'लूम कितनी कृपा होगी ?

हज़रत मव्लाना रूमी रहमतुल्लाहि अलयहिने एक हदीष शरीफका अनुवाद बयान किया है :

बांग मी आयद कि अय तालिब ब या,
आवाज़ आती है कि हे अभिलाषी यहाँ आओ ! ।

जूदे मुहताजे गदायां चूं गदा ।
जिस तरह मुहताज (निराधार) और फक़ीर (रंक) सहाय प्राप्त करनेके लिए दाताके द्धार पर आते हैं । इसी तरह अल्लाह तआलाका करम मुहताजोंको तलाश करता है ।

मदीनह मुनव्वरहमें हाजरी

20, मुहर्रम, (हि.स. 1366)के दिन मक्का मुअज़्ज़महसे मदीनह मुनव्वरह रवाना हुवा । 21, मुहर्रम, (हि.स. 1366)के दिन शामको 'बीरे अली' (रदि.) पर पहूँचा, जो मदीनह मुनव्वरहके समीप पांच मील (आठ कि.मि.)के फासले पर है । रातको वहां निवास करके 22, मुहर्रम, (1366) जुम्अहके दिन सुब्ह रव्ज़ए पाक पर हाज़िर हुवा ।

तअस्सुरात (प्रतिभाव)

तआलल्लाह ! क्या पुरनूर यह शहरे मदीनह हय,
कि जिसका जर्रा जर्रा रहमतोंका एक खजीना हय ।
हरम जन्नतसे बेहतर हय, तो कुब्बा अर्शसे बेहतर,
मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके
येह मआरिफका खजीना हय ।
गली कूचे दरो दीवार पर अनवारकी रहमत,
भला, कैसे न हो महबूबे हक़का येह मदीनह हय ।
अजब शाने रिसालत हय, अजब नूरे विलायत हय,
कि जिसके नूरसे मअ्मूर हर मुस्लिमका सीना हय !
अजब तस्कीन देह हय येह मुबारक शहर मुस्लिमको,
क़नाअत, सब्रो हिल्मो खुल्क़ ताबूते सकीना हय ।
इलाही ! हुब्बे खत्मुल् मुर्सलीं मुजको अता फरमा,
कि तेरी मअ्रिफत और कुर्बका येह खास जीना हय।
न मुज जैसा कोई उम्मतमें आसी और खाती हय,
शफाअतमें न कोई हम सरे शाहे मदीनह हय ।

मुहब्बत अहमदे मुख़्तारकी तकमीले ईमां हय,
येही हय इल्मे सीनह और येही इल्मे सफीना हय ।
'हिदायत' पर इनायत हो हमेशा या रसूलल्लाह
सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम !
येह दरबारे रसूले पाकका अदना कमीना हय ।

यह पाऊं उठते नहीं है, उठाए जातें हैं

साडे तीन महीने मदीनह मुनव्वरहमें हाज़िर रहा । हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामके रवज़ए पाकके दर्शनसे दिल और आत्मा दोनों आनंदित हो गए । जीवन भरकी आरज़ू (अभिलाषा) अल्लाह तआलाने पूर्ण कर दी । **'अल्हम्दु लिल्लाहि अला इहसानिह'** और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी तलब और करमका हक़ किस तरह अदा हो ?

मेरी तलब भी तुम्हारे करमका सदक़ह हय,
यह पाऊं उठते नहीं हय, उठाए जातें हंय ।

अल्लाह तआलासे दुआ हय कि अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके रवज़ए पाक पर ऐसी रहमतें नाज़िल फरमाए, जो कभी किसी पर नाज़िल न फरमाई हो !

'रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना' {सूरए 'ब–क़–रह' : 127}
(ए हमारे परवरदिगार ! हमारें अमलोंको कुबूल फरमा !)

अगर हर मूए तन गर्दद ज़बाने,
अगर शरीरका हर बाल ज़बान बन जाए,

ज़े तू रानम बहर यक दास्ताने ।

तो हर ज़बानसे तेरी प्रशंसा करूँगा ।

नयारम गवहरे शुक्रे तू सुफतन,

यघपि मैं तेरे आभारके मोतीयोंकी माला बनानेकी शक्ति नहीं रखता,

सरे मूए ज़ इहसाने तू गुफतन ।

और एक बालके शिर बराबर भी तेरे उपकारोंका आभार व्यक्त करनेकी पात्रता मैं नहीं रखता ।

आंखें रोज़ाकी और, दिल रोज़ावालेकी और

रवज़ए पाककी ओर आंखें लगी रहती और रवजहवालेकी ओर दिल ओर आत्मा मुतवज्जिह (ध्यानित) रहते और दुरूद शरीफका विर्द रहता था ।

कृपाऐं ओर करम जो कुछ उस पवित्र ज़ात, ज़िल्ले हक़ सल्लि अलाने मुज़ अपराघी, सियाहकार उम्मती पर फरमाऐं हैं; (उसको देख कर) मैं खूद आश्चर्यमें हूँ कि मैं तो इस कृपा ओर करमका किसी तरह पात्र न था ! लेकिन मा'लूम यह हुआ कि जो कुछ कुर्आने करीममें हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी प्रशंसाए हैं अथवा सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन, अवलिया अल्लाह (रह.)ने (जो प्रशंसाए) फरमाई हैं, हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी शान उससे भी उच्चतर हैं ।

हज़रत 'जामी' (रह.)ने सच फरमाया हैं :

‘हर चंद वस्फ मी कुनम, दर हुस्न जां बालातरी ।’

मैं कितनी ही प्रशंसा करूँ, लेकिन तू उससे भी उच्चतर हैं ।

यह अल्लाहका फज़ल हैं

मैं जो कुछ हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी कृपाऐं ओर करम, मेहमाननवाज़ी ओर बंदह परवरीके हालात वर्णन करूँगा, मुज़से परिचित, मेरे कुकर्मोंसे माहितगार हज़रातको आश्चर्यमें डालेगें ओर उनको गलत शंकाए करने पर मजबूर करेंगे । लेकिन अगर वे लोग इस बात पर थोडा चिंतन–मनन करेंगे तो उनकी बदगुमानी नेकगुमानीमें परिवर्तित हो जाएगी ।

अल्लाह तआलाका इर्शाद हैं :

ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰہِ یُؤۡتِیۡہِ مَنۡ یَّشَآءُ وَاللّٰہُ ذُوالۡفَضۡلِ الۡعَظِیۡمِ ط

{यह अल्लाहका फज़ल हैं; वह जिसे चाहे अर्पण करता हैं; ओर अल्लाह बडा फज़लवाला हैं ।} {‘हदीद’ : 21}

बरसा दे रहमत वर्षा !

जब वर्षाके दिनोंमें नदीओंके सयलाब (बाढ) कचरा ओर बड़ी बड़ी गंदकीओंके ढेरको बहा ले जाते हैं, तो अल्लाह तआलाकी कृपा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा अलयहिस्सलातु वस्सलामकी इनायतोंकी मव्जोंका कया कहना ! बल्कि यह दुन्यवी नदीयाँ तो अल्लाह तआलाकी रहमत और रसूले बर हक़

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी नदीओंकी तुलनामें एक बुंदके बराबर भी नहीं हैं !

मन आं ख़ाकम के अब्रे नव बहारी;
मैं तो मिट्टी समान हूँ; तेरी रहमतोंके बादलोंमेसे,

कुनद अज़ लुत्फ बर मन क़त्रह बारी ।
मुज़ पर थोडी रहमतोंकी बुंद बरसा दे !

'बा अदब दुरूद शरीफ पढो ! '

मैं अपने मुर्शिद हज़रत मुहम्मद अली शेरखान साहिब रहमतुल्लाहि अलयहसे जब बय्अत हुवा, उससे कई साल पहलेसे मैं बा अदब जितना हो सके उतना दुरूद शरीफ पढता रहता था ।

एक दिन मेरा पाऊं दो ज़ानू बैठे बैठे दर्द करने लगा तो मैंने एक पाऊंको नमाज़के क़ाइदा अनुसार रहने दिया और दूसरे पाऊंके घूठनेको उठा लिया और दुरूद शरीफ पढने लगा । उसी समय एक बुजुर्ग तशरीफ लाए और मेरी पीठ पर एक थप्पड मार कर फरमाया :

'बा अदब हो कर दुरूद शरीफ पढ ! '

और बा'दमें वह बुजुर्ग अदृश्य हो गए ।

उस दिनसे मैं मजबूरीकी स्थितिके सिवा हमेशा दुरूद शरीफ दो ज़ानू बैठ कर बा अदब पढता हूँ ।

इस लिए जहां तक शक्य हो, हर व्यकितको बा वुज़ू, बा

अदब दुरूद शरीफ पढना चाहीए । यूँ तो शरीअतके मसअलेके अनुसार बिना वुजूके चलते फिरते भी दुरूद शरीफ पढ सकते हैं; लेकिन बा वुजू, बा अदब पढना बेहतर हैं ।

'मैं तुम्हारा रसूल हूँ !'

ओर यह मैं इस लिए कहता हूँ कि कई बार जब नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी नज़रे करम होती हैं, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम दुरूद शरीफ पढनेवालेके पास खूद तशरीफ लाते हैं । यह बात आश्चर्यजनक नहीं हैं ।

मैंने कई बार यह बात देखी हैं कि दुरूद शरीफ पढनेके समय अद्भूत खुश्बू आती हैं, जो खुश्बू दूसरे कोई इत्रमें नहीं होती ।

कई बार यह मा'लूम हुवा कि हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम खूद तशरीफ लाए हैं ।

कभी सहाबा (रदि.)ने फरमाया कि :

"हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ लाए थे ।"

कभी खूद हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामने फरमाया कि:

"मैं तेरा "रसूल" हूँ ।"

'इस मव्लवीको इल्मे बातिन नहीं हैं !'

एक बार जयपूरमें एक मव्लवी वाअज़ करने आओे । उसने तरीक़तके सिलसिलेमें लोगोंको मुरीद करना शुरू कर दिया। मुज़े उसमें शंका हूई कि वह मव्लवी साहिब इल्मे बातिन (अंत:ज्ञान) रखते हैं या नहीं ? !

इशाके बा'द मैं हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम पर दुरूद शरीफ पढ रहा था, उस समय हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी ओर ज़रा मुख़ातिब हो कर इस बातकी तस्दीक़ (समर्थन) चाही कि मव्लवी साहिबको इल्मे बातिन (अंत:ज्ञान)हैं या नहीं ?

तो उसी समय हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तशरीफ लाए और यूँ फरमाया कि :

''इस मव्लवीको इल्मे बातिन नहीं हैं ।'

जिन्नात भागे !

एक बार सरहिंद शरीफ (पंजाबमें हज़रत मुजद्दिदे अल्फेसानी रह.के मज़ारे मुबारक)में हाज़िर था । एक जिनने मुज़े बहुत परेशान किया । मैं परेशान हो कर हज़रत मुजद्दिदे अल्फेसानी रहमतुल्लाहि अलयह और हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी ओर मुख़ातिब हुवा । उस समय नींदका गलबा अधिक था और परेशान भी बहुत था ।

मैंने देखा कि हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम आगे आगे तशरीफ ला रहे हैं, और हज़रत मुजद्दिदे अल्फेसानी रहमतुल्लाहि

अलयह कुछ पीछे हैं ।

हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामने उस जिन्नको, जो मुज़े परेशान करता था, बहुत सख़्तीके साथ डांटा और वह मुज़े छोड कर भाग गया । उसके बा'द मैं आरामसे सोता रहा ओर किसी जिनने फिर मुज़े सताया नहीं ।

हज़रत साहिबकी क़ब्रमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी ज़ियारत

मैंने पीरो मुर्शिद हज़रत मुहतरम क़िब्ला मुहम्मदअली शेरख़ान साहिब रहमतुल्लाहि अलयहकी क़ब्र शरीफमें हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी कई बार ज़ियारत की हैं ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे हम लोग दूर किस लिए ?

मतलब कि हम लोगोंको प्रेम न होनेके कारण हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामसे दूरी हैं । जो परिपूर्ण प्रेम हो तो अल्लाह तआलाके फज़्लसे कुछ दूरी नहीं हैं । यह परिस्थिति और घटनाऐं अच्छे विचार रखनेवालोंके लिए काफी हैं, लेकिन बुरे विचार रखनेवालोंके लिए यह सर्व काफी नहीं हैं ।

बुरे विचार रखनेवालोंके लिए मैं कुछ दलीलें लिखता हूँ,

शायद उन दलीलोंके बा'द उनके बुरे विचार अच्छे विचारमें परिवर्तित हो जाएं ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कुर्आन शरीफ सुनने पधारे

शाह वलीयुल्लाह साहिब मुहद्दिस दहेल्वी रहमतुल्लाहि अलयह अपने ग्रंथ 'अन्फासुल् आरिफीन'में फरमाते हैं कि :

''एक हाफिज़, क़ारी, खूश इल्हान (मघुर पठन करनेवाला) कुर्आन शरीफ पढता था । उसका कुर्आन शरीफ सुननेके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तशरीफ लाए ।''

हज़रत शेख सअ्दी (रह.)ने शे'र सुधारा

हज़रत शाह साहिब फरमाते हैं कि :

मेरे पिता शाह अब्दुर्रहीम साहिब रहमतुल्लाहि अलयह हज़रत 'सअदी' (रह.)के कुछ शे'र पढते पढते आग्राके बाज़ारमेंसे जा रहे थे । उन अशआरमेंसे एक जगह भूल गए, तो हज़रत 'सअदी' (रह.)ने आ कर फरमाया :

''अब्दुर्रहीम साहिब ! यह शे'र इस तरह हैं :—

उम्रे ब यादे हक़ न गुज़ारद बतालतस्त,

वह उम्र जो अल्लाह तआलाकी यादमें न गुज़रे, वह

बरबाद है,

इल्मे के राहे हक़ न नुमायद जहालतस्त ।

वह ज्ञान जो अल्लाह तआलाका मार्ग न बताए, वह जहालत (अज्ञान) है ।

अल्लाह तआलाके विशिष्ट लोगोंकी अर्वाहे तय्यिबात {पवित्र आत्माऐं}

ऐसी ही बहुत सी घटनाऐं 'अनफासुल् आरिफीन'में हैं । और इसी तरहकी बहुत सी घटनाऐं हज़रत मिर्ज़ा जानेजानां शहीद (रह.)के ग्रंथ 'मक़ामाते मज़हरी व मअ्मूलाते मज़हरी'में लिखी हैं। अल्लाह तआलाके विशिष्ट लोगोंकी अर्वाहे तय्यिबात {पवित्र आत्माओं}को अल्लाह तआलाके आदेश अनुसार फय्ज़ रसानी (लाभ पहूँचाना) और हिदायत (मार्गदर्शन)का इख़्तियार (अधिकार) दिया गया हैं; जीवनमें भी और मृत्युके बा'द भी ।

इस कारण हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम अपने हज़ारों उम्मतीओंको स्वप्नमें, मुराक़िबह (ध्यान)में और बहुत लोगोंको साक्षात अपने दर्शनसे लाभवंत फरमाते हैं और मार्गदर्शन फरमाते हैं ।

क़ब्रमें प्रश्नके समय हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी हाज़री

और यह बात उलमामें सर्वसंमत हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके दर्शन, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके ही दर्शन हैं । शयृताने लईन हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता । यही कमाल (खूबी) नहीं, इससे कई अधिक कमाल हक़ तआलाने अर्पण किए हैं कि असंख्य व्यकितकी हर दिन मृत्यु होती हैं, उन सर्व मुर्दाओंसे मुन्कर और नकीर (फरिश्तें) यह प्रश्न पूछते हैं :

(१) 'तुम्हारा रब (पालनहार) कोन हैं ?
(२) तुम्हारा दीन (घर्म) कया हैं ? और
(३) यह कोन व्यक्ति हैं ? '

इससे मुराद हुजूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी मानवंत ज़ात हैं । यह तस्वीर नहीं । यह कमालात (खूबियाँ) बुद्धि, ज्ञान और मानवीकी समजशक्तिसे उच्चतर हैं । जैसा कि आत्मा होनेका विश्वास हैं, लेकिन मानवीकी बुद्धि उसको समज़नेसे असमर्थ हैं ।

सद हज़ारां हम चुनीं अशबाह बीं,
देखो ! ऐसे तो असंख़्य उदाहरन मोजूद हैं,
फर्क़े शां हफताद सालह राह बीं ।
उनके दरमियान बहुत बडा अंतर हैं ।

लो, एक क्षणमें तो तख्ते बिल्किस हाज़िर !

हज़रत सुलयमान अलयहिस्सलामके सहाबी हज़रत

आसिफ बिन बरखियाने थोडी क्षणमें बिल्किसके तख्तको देख लिया और सेंकडो मील दूरसे तख्ते बिल्किसको आंखके पल ज़पकनेमें हज़रत सुलयमान अलयहिस्सलामके सामने पेश कर दिया ।

'सबा'की महारानीका नाम बिल्किस था । उसको बैठनेकी रत्नजडित राजगादी ऐसी कारीगरीसे बनाई थी कि उस समयके किसी बादशाहके पास ऐसी राजगादी न थी । जब बिल्किसने हज़रत सुलयमान अलयहिस्सलामकी सेवामें हाज़िर होनेका संदेश भेजा और बहुत तैयारी की, सरदारों समेत रवाना हूई, तब हज़रत सुलयमान अलयहिस्सलामने अपने दरबारीओंसे कहा कि :

> "तुममें कोन शख्स ऐसा हैं जो उसके मेरे पास हाज़िर होनेसे पहले उसकी राजगादी मेरे पास ले आए ?"

तो आपके प्रधान और सहाबी हज़रत आसिफने उस राजगादीको जो दो महीनेके मार्ग जितने अंतर पर थी, उसी समय आंखके पल ज़पकनेमें ला कर हाज़िर कर दिया !

मजकूर घटनाका उल्लेख कुर्आन शरीफमें सूरए 'नम्ल'में हैं ।

{"अनुवादकीय" समाप्त}

हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हुका दूरदर्शन और संबोधन

अमीरुल् मुअ्मिनीन सय्यिदिना हज़रत उमर खत्ताब रदियल्लाहु तआला अन्हुने जुम्अहके खुत्बेके समय सेंकडों मील दूरसे इस्लामके लश्कर और काफ़िरोंके लश्करको देख कर (इस्लामके) लश्करके सरदार हज़रत 'सारियह' रदियल्लाहु अन्हुको आदेश फरमाया :

'हे सारियह ! पहाडकी ओर (ध्यान दो !) '

उनकी आवाज़ वहां भी पहूँची ।

हज़रत उमर खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु एक दिन जुम्अहके खुत्बेके दरमियान अचानक पुकार उठे :

"या सारियतुल् जबल ! "

(हे सारियह ! पहाडकी ओर ध्यान दो !)

हज़रत सारियह (रदि.) सेंकडों मील दूर युद्ध भूमीमें थे, फिर भी आपने वहां अमीरुल् मुअ्मिनीन हज़रत उमर खत्ताब (रदि.)की आवाज़ सुन ली । लश्करके सर्व सहाबा (रदि.)ने भी आवाज़ सुन ली और सर्व हज़रात अमीरुल् मुअ्मिनीनके आदेश अनुसार पहाडकी ओर रवाना हो गए । काफिरोंने अपने दावपेच और व्यूहरचना अनुसार इस्लामके लश्करको दरमियानमें घेर कर सर्वको शहीद करनेका प्रयत्न किया, लेकिन अल्लाह तआलाने अमीरुल् मुअ्मिनीन (रदि.)को सेंकडों मील दूरसे लडाईका मोरचा दिखा दिया और उनकी आवाज़को सेंकडों मील दूर तक पहूँचा

दिया और अंतमें मुसलमानोंकी जीत हूई ।

{“अनुवादकीय”समाप्त}

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन

इसमें (उपर वर्णन की गई द्यटनाओंमें) तो शंका नहीं करते, लेकिन जो सर्व नबीओंके सरदार हैं; उनके कमालात (खूबियाँ) वर्णन हो, तो उनके स्वीकार ओर अस्वीकारमें सोच–विचार करते हैं ! हालांकि फरिश्तें और अम्बिया अलयहिमुस्सलाममें जो कुछ कमालात (खूबियाँ) हैं, वह सर्व नबीए करीम अलयहिमुस्सलातु वस्सलामके कमालातके प्रतिबिंब और छाया हैं । जो उलमा वारिसे हक़ हैं, उनको उनकी हेसियत अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके यह ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) और बातिनी (आंतरिक) कमालात अर्पण किए गए हैं । अगर हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामके कमालातमेंसे उनको हिस्सा न मिले तो वह वारिस नहीं हो सकते। ओर वास्तवमें यह सर्व कमालात अल्लाह तआलाकी देन हैं, अपने ज़ाती नहीं हैं । इस लिए हर व्यकितका कमाल (खूबी), चाहे वह मानव हो, फरिश्ता हो अथवा जिन हो; यह सर्व निम्न लिखित व्याख्यामें आयेंगे ।

‘अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन ।’

सर्व प्रशंसाऐं सर्व जगतोंके पालनहार अल्लाह ही के लिए हैं ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके कमालात (खूबियाँ)के स्वीकारमें सोच विचार करना ईमानकी खराबी है

जिस तरह मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने फरमाया हैं कि :

"डरो मुअ्मिनकी फिरासत (पारदर्शिता)से, कि बेशक वह देखता है अल्लाहके नूरसे ।"

सच्चे मुअ्मिनके दिलमें अल्लाहका एक नूर रोशन होता है, उसके प्रकाशमें जिस तरह हज़रत आसिफ (रदि.)ने 'सबा' शहर देखा, बिल्क़िसके तख़्तको देखा और तख़्तको हज़रत सुलय्मान अलयहिस्सलामके सामने पलभरमें ला कर पेश कर दिया । निगाहमें यह तेज़–रफतारी, यह शक्ति यह सर्व अल्लाहके नूरका करिश्मा है । जब हज़रत आसिफ (रदि.)के कमालका स्वीकार कर लिया, तो सरदारे अम्बिया नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीमके कमालातके स्वीकारमें कयूँ सोच–विचार किया जाता हैं ? अगर इन कमालातके स्वीकारमें कुछ सोच–विचार है तो यह ईमानकी खराबी हैं, कि उच्च कक्षाके व्यकितमें कमाल होनेका स्वीकार न किया जाए और मा'मूलीका स्वीकार किया जाए ! हां, यह बात ज़रूर कहनी पडेगी कि :

हर समय, हर पल, मिस्ले खुदा अथवा मिसाले खुदा

जैसा किसीका ज्ञान नहीं हो सकता । हर समय हर चीज़का ज्ञान होना अल्लाह तआलाही की शान हैं ।

और अल्लाह तआलाके ज्ञानके समुद्रकी तुलनामें सर्व मख्लूक़का ज्ञान बुंद समान हैं; लेकिन कुछ सिफतोंमें हुजूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीम खुसूसियतसे मुम्ताज़ हैं, जो और किसीको प्राप्त नहीं हैं ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी विशिष्टताऐं

(१) हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी सूरत शयृतान बना नहीं सकता ।

(२) जो निकटता अल्लाह तआलाके साथ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको प्राप्त है, उस स्थान पर कोई नबीए मुर्सल या मुक़र्रब फरिश्ता नहीं पहूँचा और न पहूँच सकेगा ।

(३) सर्व जगतोंके लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पवित्र ज़ात रहमत हैं, चाहे अम्बिया अलयहिमुस्सलाम हो अथवा फरिश्तें, कअ्बए मुअज़्ज़मह हो या अर्शे मुअल्ला ।

हज़रत जामी (रह.)ने बहुत अच्छा फरमाया है :

वसल्लल्लाहु अला नूरिन्, कज़ो शुद नूरहा पैदा,

और दुरूद हो ऐसे नूर पर कि जिससे सर्व जगत पैदा हूए,

जमीं अज हुब्बे ऊ साकिन फलक दर इश्के ऊ शय्दा ।

घरती उसके प्रेममें मुग्घ है और आकाश उसके इश्क़में शय्दा हैं।

और अल्लाह तआलाका इर्शाद हैं :

وَمَا اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ط (سورۃ 'أنبياء' :١٠٧)

{हमने आपको सर्व जगतोंके लिए रहमत बना कर भेजा है ।}

(४) अगर पैगम्बराने ऊलूल् अज़्म अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम भी हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके युगमें होते, तो उनको भी हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका अनुसरण किये बगैर चारह न होता ।

(५) हज़ारों मुसलमानोंको हर देशमें अपने दर्शनसे एक ही समय मुशर्रफ फरमाना और हर व्यकितको उनकी भाषामें मार्गदर्शन फरमाना ।

(६) हर दिन लाखों मुर्दोंकी क़ब्रोंमें उपस्थित होना और फरिश्तोंका हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके बारेमें प्रश्न करना :

"मन् हाज़र्रजुल ? " (यह कोन व्यकित है ?)

सूचना :

क़ब्रसे मुराद मनुष्यकी मृत्युसे लेकर हश्रमें जिवंत होने तकका दरमियानी समय है ।

(७) क़ियामतमें सबसे प्रथम हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उठेगें, हम्दका घ्वज हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लमके हाथमें होगा । सर्व अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके पीछे होंगे । शफाअतका दरवाज़ा आपके कारण खुलेगा ।

(८) सर्व जगतोंका अस्तित्व हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके नूरके अस्तित्वसे हैं ।

(९) शबे मेअराजमें यह भौतिक पवित्र शरीर समेत अर्शे मुअल्ला पर तशरीफ ले जाना, अल्लाह तआलाको इन भौतिक आंखोंसे देखना, अल्लाह तआलाके साथ बात करना ।

(१०) आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका सर्व अम्बिया अलयहिमुस्सलामके सरदार और अंतिम नबी होना ।

इन्ही खूबीयाँ और बुजुर्गीयोंके कारण सर्व मख्लूक़ कहती हैं :

बअ्द अज खुदा बुजुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर ।

ए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! संक्षेपमें कहें तो
आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी पवित्र ज़ात
अल्लाह तआलाके बा'द सबसे महान हैं ।

मतलब कि जिस तरह अल्लाह तआलाकी ज़ात और सिफातको पेहचाननेमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम हय्रान और लाचार है, इसी तरह सर्व मख्लूक़ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी हक़ीक़ी ज़ातको पेहचाननेमें हय्रान और असमर्थ हैं ।

हय मअ्रिफते कुलसे वरा ज़ाते इलाही,

सर्व मअ्रिफतसे अल्लाह तआलाकी ज़ात उच्चतर हैं ।

मख्लूक़के इल्मोंसे वरा शाने मुहम्मद (सल.)

मख्लूक़के ज्ञानसे, हुज़ूर (सल.)की शान उच्चतर हैं ।

मन चे दानम, मन चे फहमम शाने शां,

मैं कयां जानुं, मैं कया समजुं आप (सल.)की शान ? !

आरिफन्द हय्रान व साकित मुर्सलां ।

जब कि आरिफ लोग हय्रान है और अम्बिया (अलै.) चुप हैं ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके मुबारक मुख पर नाखूशीके चि न्ह

मैंने अल्लाह तआलाके फज़्लसे जयपूरमें हालूकान मोहल्लेमें अब एक मस्जिद बनाई हैं । मैं उस मस्जिदमें बैठा था कि कुछ गुनूदगी (नींद)सी आ गई । उस समय मेरे पाऊंके तलिये अर्थात् नीचेका भाग मदीनह मुनव्वरहकी ओर था । मैंने देखा कि हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ लाए, लेकिन मेरे पाऊंके तलिये मदीनह मुनव्वरहकी ओर थे, उसको देख कर नाखूश होनेके चिन्ह प्रगट हूए और आपकी मुबारक इच्छा ऐसी जाननेको मिली कि मदीनह पाककी ओर पीठ न करनी चाहीए, और पाऊं भी न करने चाहीए, और पाऊंके तलिये भी उस तरफ न होने चाहीए । ऐसा करना शिष्टाचारके विरुद्ध है ।

उस दिनसे मैं इसका अधिक ख्याल रखता हूँ । और हर उम्मतीको हर देशमें मदीनह मुनव्वरहके अदब (सम्मान)का लिहाज़ रखना चाहीए । अदब महान नेअमत है, और बेअदबी महान गुस्ताख़ी और बदनसीबी है ।

शरफुल् इन्सानि बिल् इल्मि वल् अदब,
मानवकी बुजुर्गी ज्ञान और अदब (सम्मान)के द्धारा है,

व ला बिल् मालि व ला बिन्नसब ।
माल या वंश—कुल और परिवारके कारण नहीं है ।

बेअदब महरूम मानद अज फज्ले रब ।
कयूँ कि बेअदब अल्लाह तआलाके फज़्लसे वंचित रहता है !

बेअदब तन्हा न खुदरा दाश्त बद,
बेअदब मात्र अपना ही बूरा नहीं करता है,

बल्कि आतिश दर हमा आफाक़ ज़द ।
बल्कि सर्व जगतमें आग लगा देता है ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने फरमाया : “ यह दुनिया है ! ”

मैंने सर्व प्रथम जो दर्शन नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामका हिन्दुस्तानमें किया, उसको लगभग 60 (सांठ) सालका समय हो गया है, उस समय मैं हज़रत साहिब (रह.)से बय्अत न हुवा था । लेकिन दुरूद शरीफ पढता रहता था और

जो व्यकित जब तक किसी बुजुर्गसे बय्अत न हो, (तब तक) उसको विपुल मात्रामें दुरूद शरीफका विर्द रखना चाहीए । उसमें दीन और दुनियाका बहुत फायदा है ।

दर्शनके समय मैंने यह देखा कि :

एक उच्च स्थान है, वहां पर हुजूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीम और हज़रत बीबी फातिमह ज़हरा रदियल्लाहु अन्हा और सय्यिदिना हज़रत इमाम हुसय्न अथवा सय्यिदिना हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हुमा तशरीफ फरमा हैं । उस उच्च स्थानके सामने एक स्थान बहुत ही नीचेके स्थानमें है, और उसके चारों तरफ पक्की दीवार है और उसके घेरावमें दुनियाकी सर्व चीज़ें और सर्व प्रकारके व्यकित हैं । सर्व व्यकित दुनियामें जितने काम हैं, उसमें प्रवृत्त हैं । खरीदना–बेचना, लडाई–फसाद...आदि सब हो रहा है ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने मुज़े संबोधित करके इर्शाद फरमाया :

“यह दुनिया है, इसमें कभी न फंसना ! ”

उस समयसे मेरे स्वभावमें दुनियाकी इच्छा कम और आख़िरतको प्राप्त करनेकी तरफ रगबत अधिक हो गई ।

हजसे पूर्व 140 बार दर्शन

मैं हजके लिए मक्का मुअज़्ज़मह और मदीनह मुनव्वरह हाज़िर हुवा, उससे पूर्व हिन्दुस्तानमें अल्लाह तआलाके फज़्लसे

और नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामकी कृपासे और पीराने इज़ाम रहमतुल्लाहि अलयहिम अजमईनके सदक़ेमें मुज़े लगभग एकसो चालीस (140) बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके दर्शन हो चुके थे । उसमेंसे कुछ स्वप्नका वर्णन करके मदीनह मुनव्वरहमें जो कृपा हूई है, उसका वर्णन करूँगा ।

जयपूरकी मस्जिदके निर्माणमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम सहाबा (रदि.)के साथ शामिल

जयपूरमें अजमेरी दरवाज़ाके बाहर मैंने अल्लाह तआलाके फज़्लसे एक मस्जिद निर्माण की हैं, उसको लगभग चालीस सालका समय हो गया है । उस मस्जिदका निर्माण चालु था । अंदरसे छतका काम चालु था । रमज़ान शरीफमें तरावीह हो रही थी । मुज़े तरावीहमें खडे खडे गुनूदगी (अर्घनिद्रा) आ गई । उस समय मैंने देखा कि :

> "हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और कुछ सहाबी (रदि.) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके साथ मस्जिदका काम अपने मुबारक हाथोंसे कर रहे हैं !"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने पूछा : "मस्जिद कितनी ऊँची है ?"

वही मस्जिद जब तैयार हो गई तो एक दिन मैं वहां दुरूद शरीफ पढ रहा था । इसी स्थितिमें मुज़ पर गुनूदगी (अर्धनिद्रा) छा गई, तो मैंने देखा कि :

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तशरीफ लाए और मुज़से इर्शाद फरमाया :

''मस्जिद कितनी ऊँची है ? ''

मैंने अर्ज़ किया :

''या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! मस्जिद 22 (बाइस) फिट ऊँची है । ''

उसके बा'द हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम तशरीफ ले गए ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जयपूरके वक्फ मकानकी छत पर

मैंने अल्लाह तआलाके फज़्लसे मद्रसअे ता'लीमुल् इस्लाम, जो हिजरी सन 1330 में इस मस्जिदमें चालु किया है, उसके निभावके लिए एक दो मंज़िला मकान अजमेरी दरवाज़ाके बाहर निर्माण किया है । उस मकानके किरायेकी रकमसे मद्रसा चल रहा है ।

वह मकान तैयार हुवा, उस समय हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको देखा कि,

"आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उस मकानकी छत पर पधारे है ।"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु हिदायत मस्जिदमें

मैंने एक मस्जिद अजमेरी दरवाज़ाके बाहर हालूकान मोहल्लेमें इ.स. 1944 में मेरे मकानके निकट निर्माण की , जिसको पूर्ण हूए पांच साल हूए, ❶ उस मस्जिदका नाम 'हिदायत मस्जिद' है । उस मस्जिदमें मैंने एक बार देखा कि :

"हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम और अमीरुल् मुअ्मिनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु पधारे हैं ।"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हज़रत सय्यिद साहिब रहमतुल्लाहि अलयह हिदायत मस्जिदमें

एक बार इसी (हिदायत) मस्जिदमें यह देखा कि :

"हुज़ूर अलयहिस्सलाम और सय्यिद हज़रत इमाम अली

❶ इस बातसे यह मा'लूम होता है कि आपने फुतूहुल् हरमैन पुस्तक इ.स. 1949में आपके अवसानसे दो साल पूर्व लिखी थी ।

शाह साहिब (रत्र छत्रवाले) रहमतुल्लाहि अलयह मेरे दादा पीर पधारे हैं ।"

इसी हिदायत मस्जिदमें पूर्व एक बार हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके जो दर्शन हूए थे, उसका वर्णन उपर लिख चुका हूँ, जो अदब (सम्मान)के बारेमे है ।

मतलब कि इसी मस्जिदमें हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके तीन बार दर्शन हूए ।

सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईनका आश्वासन : 'चिंता न करो ! '

अजमेरी दरवाज़ाके बाहरकी मस्जिद और मकान तथा मद्रसा और यह हिदायत मस्जिद मात्र अल्लाह तआलाका फज़्ल और सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफा अलयहिस्सलातु वस्सलामकी कृपादृष्टिसे बने हैं ।

इस बातको मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ, कयूँ कि जब अजमेरी दरवाज़ाके बाहर मस्जिदका काम शुरू हुवा और पैसेकी सख्त ज़रूरत पडी और मैं परेशान हुवा, तो हज़राते सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईनको देखा कि तशरीफ लाए और फरमाने लगे :

"चिंता न करो ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुबारक इच्छा है । मस्जिद इन्शाअल्लाह बहुत

जल्द बन जाएगी ! ”

नींदसे आंख खुली, संतोष हुवा और उसी दिनसे हर तरफसे इतने प्रमाणमें अल्लाह तआलाने पैसे भेजे कि एक सालकी जगह मस्जिदका ज़रूरी काम तीन माहमें पूर्ण हो गया !

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हज़रत साहिबने गहरे गढ़ेमेंसे उठा लिया

एक बार मैंने स्वप्नमें देखा कि :

मैं एक गहरे गढ़ेमें (पडा हुवा) हूँ, उसमेसे निकलनेका प्रयत्न करता हूँ, लेकिन निकल नहीं सकता । उस समय देखा कि,

हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम और हज़रत साहिब रहमतुल्लाहि अलयह उस गढ़ेके निकट तशरीफ लाए और मेरा एक हाथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने अपने मुबारक हाथोंमे पकडा और दूसरा हाथ हज़रत साहिबने पकडा और मुज़े उस गढ़ेमेंसे बाहर निकाल लिया ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और हज़रत गौस पाक (रह.) पधारे

एक बार एक स्वप्नमें देखा कि :

मेरा अवसान हो गया है और मुझे दफन करके सर्व लोग चले गए । उसके बा'द मेरी क़ब्र पर हुज़ूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलाम और महबूबे सुब्हानी शय्ख अब्दुल् कादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलयह पधारे । उस समय मेरी क़ब्र फट गई और मैं क़ब्रमें हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी ओर मुंह करके उठ कर बैठ गया । उस समय हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामने मुज़ पर अत्यंत कृपासे ध्यान केन्द्रित फरमाया । उस समय मेरा मुंह हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जैसा हो गया । इस कृपा और इनायत पर लाखों ईमान और आत्मा कुर्बान हो :

जां लाख 'हिदायत'को इनायत हो इलाही,
करता रहूँ कुर्बां सगे दरबाने मुहम्मद (सल.)

यह बात मेरे साथ विशिष्ट और नई नहीं है । हज़रत मिरज़ा जानेजानां शहीद रहमतुल्लाहि अलयहके साथ और अन्य उम्मतीओंके साथ ऐसी कृपा फरमाई गई है, उपरांत हज़रत साहिब रहमतुल्लाहि अलयहके साथ भी मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी ऐसी ही कृपा देखी है । हम–शकल (समरूप) हो जाना, उसको तसव्वुफमें **'इत्तिसाले रूहानी'** ❶ कहते है । अन्य अवलियाओंमें भी ऐसा हुवा है ।

अब मैं हिन्दुस्तानकी इस घटनाओंको पूर्ण करके मदीनह मुनव्वरहकी इनायत, कृपा, महेमान नवाज़ी और बंदह नवाज़ीका

❶ विवरणके लिए देखिये : 'मेअयारुस्सुलूक' विभाग : ३, प्रकरण : ६

संक्षिप्त वृतांत वर्णन करूँगा ।

ख़राबातियां मय् परस्ती कुनीद,

शराबी शराब पीते हैं,

मुहम्मद ब गोइद व मस्ती कुनीद ।

तूं मुहम्मद (सल.)का नाम ले और मस्तीमें जूम !

सुतूने हन्नानह और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम दोनों चुप !

मैंने हिन्दुस्तानसे ही तीन माह तक रव्ज़ए पाक पर हाज़िर रहनेकी इच्छा कर ली थी । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी कृपासे साडे तीन मास रव्ज़ए पाक पर हाज़िर रहा । जब तीन माह हूए तो हिन्दुस्तानकी तरफ आनेके विचार आने लागे । उस समय वहांकी हाज़िरीकी शुद्ध इच्छामें हिन्दुस्तानका विचार आना, छुपा शिर्क जैसा मा'लूम होनेसे, विदायके लिए परवानगी (प्राप्त करनेका) विचार करके हरमे पाकमें तहज्जुदके समय बैठा । कुछ गुनूदगी (तंद्रा) जैसी आई, उस समय मैंने देखा कि :

सुतूने हन्नानह दरबारे पाकमें हाज़िर है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम भी तशरीफ फरमा हैं ।

मैंने सुतूने हन्नानहको हाथ लगा कर कहा कि :

तुम मेरी विदायके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व

सल्लमसे अर्ज़ करो !

तो सुतूने ह़न्नानह भी चुप रहा और हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम न परवानगी देते हैं, न इन्कार फरमाते हैं । इस इनायत पर कुर्बान ! लेकिन मैंने अपनी वहांकी हाज़िरीके शु द्ध कार्यमें हिन्दुस्तानकी ओर आनेका विचार दिलमें आता हुवा देखा; तो फिर अपनी इच्छाकी कमी समज़ कर हिन्दुस्तान रवाना हो गया । और जिद्दहसे जहाज़में सवार हो कर हिन्दुस्तान आ गया ।

सुतूने ह़न्नानह

मस्जिदे नबवीमें मिम्बर बननेसे पूर्व हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम एक स्थंभके साथ सहारा दे कर खुत्बा देते थे। फिर जब मिम्बर बन गया और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम मिम्बर पर चढ कर खुत्बा देने लगे, तो आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी जुदाईमें वह स्थंभ बालककी तरह रोने लगा। आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने मिम्बर परसे उतर कर उसे आश्वासन दिया तो वह स्थंभ चुप हुवा । उस स्थंभको 'सुतूने ह़न्नानह' कहते हैं ।

हिन्दुस्तान वापसीकी घटना

हज़रतके हजके साथी मुहतरम अब्दुलअज़ीज़भाई टेलर तथा उनके पुत्र मुहतरम हाशिमभाई वर्णन करते थे कि :

हजके बा'द सबसे अंतिम स्टीमरमें हमको हिन्दुस्तान वापस

आना था । हज़रत साहिबका अधिक दिनों ठेहरनेका विचार था ।

हमने कहा कि :

‘हज़रत ! यह अंतिम स्टीमर है । इसके बा’द प्रवासीओंके लिए हिन्दुस्तान आनेके लिए अन्य कोई स्टीमर नहीं है । इस लिए बा’दमें आप हिन्दुस्तान किस तरह आओगें ? !’

हज़रतने विश्वासके साथ फरमाया कि :

‘इन्शाअल्लाह मैं आ जाऊँगा । ’

अंतिम स्टीमर रवाना होनेके संभवित 40 (चालीस) दिन बा’द हिन्दुस्तान आनेके इरादेसे हज़रत जिद्दह बंदर पर आए । बंदरमें एक युरोपियन मालवाहक स्टीमर खडी थी । हज़रतको देख कर स्टीमरका कप्तान नीचे उतरा और हज़रतके निकट आ कर पूछा :

‘कहां जाना हैं ? ’

हज़रतने फरमाया :

‘मुज़े हिन्दुस्तान जाना है । ’

कप्तानने आपको स्टीमरमें बिठा दिया और मुंबई बंदर पर कप्तान खूद आपको बंदरके बाहर तक छोड गया ।

मुंबईसे हज़रत सीधे सूरत आए और अपना पासपोर्ट आदि कागज़ात हमको सोंप कर अपने प्रवासकी बात की ।

{“अनुवादकीय” समाप्त}

मदीनह मुनव्वरहमें जब तक हाज़िर रहा, कई बार अपने दर्शनसे हुज़ूर अलयहिस्सलाम मुशर्रफ फरमाते रहे, शायद ही कोई दिन ऐसा गुज़रा होगा कि अपनी बदनसीबीसे वंचित रहा होगा ।

फय्ज़ाने मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम !

हज़रत शाह अब्दुल् हक़ मुहद्दिस दहेल्वी और हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस दहेल्वी रहमतुल्लाहि अलयहिमने अपने ग्रंथोमें हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी इनायत और मेहमान नवाज़ीकी जो घटनाऐं लिखी हैं, वह बहुत कम हैं ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी कृपा, मेहमान नवाज़ी और बंदा नवाज़ीकी बातें इन बयानात और घटनाओंसे कई दरजा उच्चतर है । जिसको जितनी जानकारी हूई, उसने इतना ही वर्णन किया । समुद्रके जिस किनारे पर जो पहूँचा, उसने उस जगह जो देखा, वह वर्णन किया ।

खातिमुन् नबीय्यीन अलयहिस्सलातु वस्सलामके फय्ज़ानके दरियामेंसे अम्बिया, सहाबा, अव्लिया सबने फय्ज़ प्राप्त किया; लेकिन अपने अपने मरतबे अनुसार (प्राप्त किया ।) फिर भी फय्ज़ाने जामिइय्यते हक़ीक़ते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे संपूर्ण कोई परिचित न हुवा । ❶ इसी लिए

❶ 'हक़ीक़ते फय्ज़ाने मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम'के विवरणके लिए देखिये 'मेअयारुस्सुलूक' विभाग : 5, प्रकरण : 3

हज़रत मूसा और हज़रत इसा अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी उम्मतमें होनेकी आरजू करते रहे; इसी लिए हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामने फरमाया कि :

> ''अगर मेरी नुबुव्वतके समयमें मूसा और इसा अलयहिमुस्सलाम होते, तो उनको मेरा अनुसरण किए बिना छुटकारा न था ।''

यह फय्ज़ाने मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और शाने मुहम्मदी अलयहिस्सलातु वस्सलाम हैं !

साहिबे लव्लाक अलयहिस्सलातु वस्सलामके हरमे पाकमें मैं तहज्जुदकी नमाज़के बा'द अथवा अन्य समय पर हाज़िर रहता तो नमाज़के काइदेमें और उसी बैठकमें गुनूदगी (नींद) भी आ जाती थी और इसी स्थितिमें मैंने हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी करम परवरी और मेहमान नवाज़ी देखी है; उनमेंसे कुछ घ्रटनाऐं संक्षिप्तमें वर्णन करता हूँ ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी तरफसे भोजन

पहली बार यह देखा कि, हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी तरफसे मेहमान नवाज़ीके तौर पर मेरे सामने दस्तरख्वान बिछाया गया और उस पर दो रोटी और एक रकाबीमें सालन रखा गया । और एक सुराहीमें ठंडा पानी एक ग्लास

समेत रखा गया ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी तरफसे चाय-नाश्ता

एक दिन सूर्योदयसे कुछ पूर्व यह देखा कि, हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी तरफसे नाश्तेके लिए एक प्यालेमें चाय अर्पण की गई । और उसमें बिस्किट अथवा पाऊँके छोटे छोटे टुकडे थे । जब मैं जाग्रत हुवा तो मेरा मुंह इतना मीठा था कि जिसको मैं कया वर्णन करूँ ? ! और उस चायकी खुश्बूसे मेरा दिमाग महकता था ओर जिस जगह मैं बैठा था, वह जगह दूर तक उस चायकी खुश्बूसे महकती थी । और कई दिन उसकी खुश्बूसे वह जगह महकती रही और दीर्घ समय तक मेरा मुंह मीठा रहा, और मुज़े उसकी खुश्बू आती रही ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी तरफसे खुश्बूदार पुलाव

एक दिन एक सहाबी रदियल्लाहु अन्हु एक रकाबीमें पुलाव लाए और फरमाया कि :

"हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने भेजा है ।"

उस पुलावकी खुश्बूसे मेरा दिमाग दीर्घ समय तक महकता

रहा और जिस जगह मैं हाज़िर रहता था, हरमे पाकका वह कोना उस पुलावकी ख़ुश्बूसे दीर्घ समय तक महकता रहा ।

हज़रतके हजके प्रवासके साथी मुहतरम जनाब हाजी अब्दुल् अज़ीज़भाई टेलर, सूरती वर्णन करते थे :

मदीनह मुनव्वरहमें हमारे निवासके निकट हज़रतके निवासके लिए अलग मकान किराये पर रखा था । हज़रतके लिए चाय, नाश्ता, भोजन आदि पहूँचानेकी सेवा मुज़े दी गई थी ।

एक दिन नियम अनुसार सुब्ह चाय–नाश्ता ले कर मैं हज़रतकी सेवामें हाज़िर हुवा । हज़रतने अस्वीकार फरमाया । मैंने बहुत आग्रह किया तो हज़रतने फरमाया कि :

"आज चाय–नाश्तेकी दिलमें इच्छा नहीं है ।"

मैं सर्व सामग्री लेकर हमारे निवासकी ओर जा रहा था, वहीं मार्गमें हाजी इस्माईलभाई मिले । मैंने उनको हक़ीक़त बताई। उन्होंने मुज़े कहा कि :

"मेरे साथ आओ । हम दोनों दो बारह हज़रतको आग्रह करें ।"

हम दोनों हज़रतकी सेवामें हाज़िर हूए । हमारे अधिक आग्रहके कारण अंतमें अस्वीकार करनेका रहस्य बताते हूए हज़रतने फरमाया कि :

"आज (नबीए करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी

तरफसे) मेरी दा'वत हूई है ! ''

उसके बा'द हम दोनोंके संतोषके लिए आपने अपना सीधा हाथ हमारी नाकके सामने रखा, तो उसमेंसे श्रेष्ठतम बिर्यानीकी खुश्बू आती थी !

❍

कहते है कि इत्रवालेकी दोस्तीसे इत्र चाहे प्राप्त हो या न हो, ख़ुश्बू तो ज़रूर प्राप्त होती है । इसी तरह अल्लाहवालोंकी दोस्तीसे भी जीवनमें ऐसा अमूल्य अवसर प्राप्त होता है । नबीए करीम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुबारक बिर्यानीकी श्रेष्ठतम ख़ुश्बू सूंघनेको मिलना, यह भी कितना बडा सौभाग्य है।

{''अनुवादकीय'' समाप्त}

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके साथ मुसाफह (हस्त मिलन)

एक बार देखा कि, हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम कुछ सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम अजमईनके साथ मेरे पास तशरीफ लाए और इनायत व कृपासे मेरे साथ मुसाफह (हस्त मिलन) फरमाया ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने दस रूपिये भेट दिए

एक दिन देखा कि, हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ लाए और मुजे एक कागज़में रखे हूए दस रूपिये अर्पण फरमाए । उस दिनसे हमेशा मेरा हाथ फराख (विस्तृत, वसीअ) रहता है, और खर्चकी तकलीफ नहीं है ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने रूमाल भेट दिया

एक बार यह देखा कि, हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम अत्यंत शान व शव्कत (दबदबे)के साथ रव्ज़ए पाकमें तशरीफ फरमा है । मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी सेवामें हाज़िर हुवा, तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने एक रूमाल इनायत फरमाया । मैंने उस रूमालको मेरे गलेमें लपेट लिया ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके साथ अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम

एक बार देखा कि, हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम रव्जए पाककी ओर तशरीफ ले जा रहे है, और कई हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम अदबके कारण हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे कई क़दम पीछे पीछे तशरीफ ले जा रहे हैं ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी तरफसे अंगूर

एक बार देखा कि, एक सहाबी रदियल्लाहु अन्हु एक रकाबीमें अत्यंत उमदा अंगूर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके रव्ज़ए पाककी तरफसे लाए और मुज़े अर्पण फरमा कर फरमाया कि :

''यह अंगूर हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामने तुमको अर्पण फरमाई हैं ।''

फना फिर्रसूल

एक बार देखा कि, नबीए करीम, रऊफ व रहीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीम रव्ज़ए मुबारकसे मेरी तरफ तशरीफ ला रहे हैं । जब मुज़से निकट हो गए तो उस समय हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी निगाहे करम बहुत अधिक थी । उसी समय हज़रत रहमतुल् लिल् आलमीन (सर्व जगतोंके लिए रहमत) शफीउल् मुज़निबीन (अपराघीओंके लिए सिफारिशकर्ता) अलयहिस्सलातु वस्सलामका पवित्र शरीर आगेकी तरफसे फटा और हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने मेरे शरीरको अपने पवित्र नूरानी शरीरमें समा लिया और मेरा शरीर हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके पवित्र शरीरमें अदृश्य हो गया; और फिर थोडे समयके बा'द देखा कि मेरा शरीर अलग है और मैं हुजूर

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके सामने हाज़िर हूँ ।

फना फिश्शय्ख

इसी तरह जयपूरमें मेरे मुर्शिद हज़रत साहिब रहमतुल्लाहि अलयह जब हयात थे, तो उस समय भी मैंने देखा था कि :

मेरा शरीर हज़रत साहिबके शरीरमें बिल्कुल अदृश्य हो गया और थोडे समयके बा'द मेरा शरीर और हज़रत साहिब रहमतुल्लाहि अलयहका शरीर अलग अलग हो गए । इस स्थितिको **'फना फिश्शय्ख'** और **'फना फिर्रसूल'**❶के नामसे पेहचाना जाता है ।

कश्फ और स्वप्नकी कसोटी

सवाल :

हुजूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामके दर्शन तो हुज़ूरके ही दर्शन है, कयूँ कि अहले सुन्नतके उलमा इसमें सर्वसंमत हैं कि शय्तान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी शकल नहीं बना सकता । लेकिन कश्फके तथा स्वप्नके अन्य हालात सच हैं अथवा गलत हैं, यह किस तरह जान सके ? कयूँ कि उसमें शय्तान घोका दे सकता है !

जवाब :

जो कश्फ या स्वप्न या गय्बकी आवाज़ कुर्आन शरीफ

❶ विवरणके लिए देखिये : 'मेअयारुस्सुलूक' विभाग : 3, प्रकरण : 6

और हदीषे मुबारकके विरुद्ध हो, वह बिल्कुल स्वीकारके पात्र नहीं।

और जो कश्फ, इदराक (समज, प्रतीति), स्वप्न या घ्रटनाओंका समर्थन कुर्आने पाक अथवा हदीष शरीफसे होता हो, वह स्वीकारके पात्र हैं ।

सवाल :

वह हालात अथवा घ्रटनाऐं जिसकी कुर्आने पाक अथवा हदीष शरीफसे न पुष्ठि होती हो, न समर्थन होता हो, उसको स्वीकार अथवा अस्वीकार करनेकी कोनसी कसोटी हैं ?

जवाब :

कश्फ या स्वप्न या गैबी आवाज़के सहीह अथवा गलत होनेकी कसोटी यह है कि :

- कश्फ या स्वप्न या आवाज़के बा'द दिलमें शर्हे सदरका नूर हो,
- तव्हीद और अनुमोदनमें अघिकता मा'लूम हो,

तो समज़ना चाहीए कि ठीक है; और जो दिलमें ज़िल्लत, गभराहट, अंघकार, परेशानी मा'लूम हो तो उसको शय्तानका वसवसा समज़ना चाहीए ।

शर्हे सदरका ज़ाहिरी अर्थ सीना खोल देना है ।

अल्लाह तआलाने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे फरमाया :

اَلَمْ نَشْرَحْ لَکَ صَدْرَکَ ط (سورهٔ 'انشراح' : ۱)

{क्या हमने आपके लिए आपका सीना खोल नहीं दिया ? }

हज़रत मूसा अलयहिस्सलामने दुआ मांगी :

رَبِّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ ط (سورۂ طٰہٰ : ۲۵)

{ए मेरे परवरदिगार ! मेरा सीना खोल दे । }

{"अनुवादकीय" समाप्त}

स्वप्न, कश्फ और जाग्रतावस्थाकी वस्तुओंमें तफावत

सवाल :

जो चीज़ स्वप्नमें या कश्फकी स्थितिमें गय्बसे अर्पण की जाती है, उसका अस्तित्व जागनेके बा'द, होशमें आ जानेके बा'द हूबहू ऐसा ही (स्वप्न जैसा ही) क्यूँ नहीं होता ?

जवाब :

जो चीज़ स्वप्नमें या कश्फमें दिखाई देती है, वह **'आलमे मिसाल'**में नज़र आती है । हर वस्तुका असली नक़्शा सूक्ष्म स्वरूपमें **'आलमे गय्ब'**में है । **'आलमे गय्ब'** और यह **'आलमे शहादत'** (दुनिया)के दरमियान **'आलमे मिसाल'** हैं । **'आलमे मिसाल'**में **'आलमे गय्ब'**की वस्तुओंका प्रतिबिंब सूक्ष्म स्वरूपमें है । विस्तृत नहीं है, लेकिन यह सूक्ष्मता वस्तुओंकी हक़ीक़तसे अलग नहीं है ।

उदाहरणके रूपमें दरख्तके बीजमें दरख्तकी हक़ीक़त होती है, लेकिन उसकी विस्तृत विगतें दिखाई नहीं देती ।

{दरख्तके बीजमें दरख्तकी जड, तना, टहनी, पत्ते, फल, फूल...आदि सर्व होता है, लेकिन वह इतने सूक्ष्म स्वरूपमें होता है कि वह हमारी भौतिक आंखोंसे दिखता नहीं है ।}

इसी तरह स्वप्नमें या कश्फमें वस्तुकी हक़ीक़त दिखाई नहीं देती ।

हर वस्तुकी हक़ीक़त अल्लाह तआलाके ज्ञानमें है, और हर वस्तुका सूक्ष्म स्वरूप आलमे गय्बमें है; लेकिन उसका निदर्शन आलमे शहादत या आलमे मिसालमें अन्य स्वरूपमें हैं । जिस तरह बीजका स्वरूप अलग है और दरख्तका स्वरूप अलग है, अथवा दरख्तकी टहनीओंमें फूल, फल और पत्ते है ।

हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलाम : स्वप्न और ता'बीर (संकेतार्थ)

उदाहरणके रूपमें :

(१) सय्यिदिना हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलातु वस्सलामने कैदखानेमें दौ कैदीओंको उनके स्वप्नकी ता'बीर (स्वप्नका संकेतार्थ) बताई ।

(२) मिसरके अज़ीज़ (बादशाह)के स्वप्नकी ता'बीर (स्वप्नका संकेतार्थ) बताई ।

(३) सूर्य और चांद तथा तारोंको अपना सजदह करते हूए देखा ।

इन तीनों स्वप्नकी सूरत अलग है और ता'बीर अलग है ।

(1) दो केदीओंके स्वप्न और उसकी ता'बीर (संकेतार्थ)

हज़रत यूसूफ अलयहिस्सलामके साथ दो नवजवान भी कैदखानेमें थे । उनमेंसे एक शाही शराब पिलानेवाला (साक़ी) था और दूसरा शाही भठियारखानाका मुख्य भठियारा था । एक दिन उन दोनोंमेंसे शराब पिलानेवाला (साक़ी) केहने लगा :

"मैं शराब बनानेके लिए अंगूर नीचोड रहा हूँ, ऐसा मैंने स्वप्न देखा ।"

दूसरेने कहा :

"मैंने स्वप्न देखा है कि मेरे सर पर रोटीओंका थाल है और परिन्दें उसको खा रहे है ।"

हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामने उनके स्वप्नकी ता'बीर बताते हूए फरमाया :

"दोस्त ! जिसने यह देखा कि अंगूर नीचोड रहा है, वह दो बारह (पुनः) मुक्त हो कर बादशाहके साकी (शराब पिलाने)का काम करेगा । जिसने रोटीवाला स्वप्न देखा है, उसको फांसी दी जाएगी और परिन्दें उसके सरको चीर कर

फाड खाऐंगे ।''

शराब पिलानेवाला और शाही भठियारा पर यह आरोप था कि उन दोनोंने बादशाहकी खाने–पीनेकी वस्तुओंमें ज़हर मिलाया है । जब जांच पूर्ण हूई तो भठियाराका आरोप साबित हुवा और उसको फांसी दी गई, जब कि शराब पिलानेवालेको मुक्त कर दिया गया ।

(2) बादशाहका स्वप्न और उसकी ता'बीर (संकेतार्थ)

हज़रत यूसूफ अलयहिस्सलाम कैदखानेमें थे, तब मिसरके अज़ीज़ (बादशाह)ने स्वप्न देखा कि :

> ''7 (सात) मोटी और शक्तिशाली गायोंको 7 (सात) कमज़ोर गाय निगल गई और 7 (सात) हरी कंटीओंको 7 (सात) खुश्क (सुखी) कंटी खा गई ।''

इस स्वप्नकी ता'बीर हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामने इस तरह फरमाई कि :

> ''तुम 7 (सात) साल तक लगातार खेती करते रहोंगे और वह तुम्हारी खूशहाली और समृद्धिके साल होंगे । उसके बा'दके 7 (सात) साल बहुत ही कठिन मुसीबतके आऐंगे। तुम्हारा जमा किया हुवा सर्व संग्रह नष्ट कर देगा । अर्थात् मोटी गाय और हरी कंटी खूशहाली और सुख समृद्धिके साल है और कमज़ोर गाय और खुश्क (सुखी) कंटी दुष्कालके साल है; जो खूशहालीके उत्पादनको खा जाऐंगे ।''

(3) चांद, तारें और सूरजका सजदह

हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामने बचपनमें स्वप्न देखा कि :

11 (ग्यारह) सितारे और सूरज तथा चांद सर्व उनको (हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामको) सजदह कर रहे हैं ।

इस स्वप्नकी ता'बीर एसी है कि, तारोंसे भाईओंकी तरफ इशारा है । उनके **11** (ग्यारह) भाईओंमेसे एक भाई हक़ीक़ी, बाक़ी सब सोतीले थे । और सूरज तथा चांदसे पिता और सोतीली माताकी तरफ इशारा है । हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामकी हक़ीक़ी माताका अवसान हो गया था । तो मतलब यह कि सर्वको कभी न कभी हज़रत यूसुफ अलयहिस्सलामकी महानताके सामने सर जुकाना पडेगा ।

{''अनुवादकीय'' समाप्त}

बेगम 'जुबय्दा ख़ातून'का स्वप्न

और इसी तरह हारून अल् रशीदकी नेक और परहेज़गार बेगम जुबय्दह ख़ातूनका स्वप्न देखनेमें (बाह्य स्वरूपमें) अत्यंत बदतर है, लेकिन वास्तविकमें अत्यंत बेहतर है ।

हारून अल् रशीदकी नेक और परहेज़गार बेगम जुबय्दा ख़ातूनने एक बार स्वप्न देखा कि :

“हज़ारों—लाखों पशु—पक्षी, जानवर और मनुष्य उसके साथ ‘संभोग’ (मैथुन) कर रहे हैं ! ”

उस समयके मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत बेहलूल दाना (रह.)ने स्वप्नकी ता’बीर (संकेतार्थ) बताते हूए फरमाया कि :

“इस स्वप्नको अत्यंत बदतर समज लिया गया है, लेकिन वास्तवमें यह स्वप्न अत्यंत बेहतर है ! ”

उसकी ता’बीर (संकेतार्थ) यह है कि जुबय्दा ख़ातूनके हाथोंसे उसके जीवनमें कोई एक ऐसा महान काम होगा कि जिसकी वजहसे हज़ारों—लाखों पशु—पक्षी, जानवर, मनुष्यको बहुत बहुत राहत होगी ।

और यह ता’बीर सहीह (सच) साबित हूई । एक बार पवित्र मक्का और उसके निकटके प्रदेश पर भयानक दुष्काल हुवा । पानीकी बहुत तंगी हूई । पशु—पक्षी, जानवर और मनुष्य प्याससे बेचेन हो गए । उस समय बेगम जुबय्दा ख़ातूनने पुष्कळ घन खर्च करके ‘जुबय्दा नहर’ बनाई और सर्वकी प्यास बुज़ाई । आज भी वह नहर मोजूद है । आज तक उसमेंसे करोडो पशु—पक्षी, जानवरों और मनुष्योंने प्यास बुज़ाई है । आज भी बुज़ाते हैं और भविष्यमें भी बुज़ाते रहेंगे । इन्शाअल्लाह ।

{“अनुवादकीय” समाप्त}

‘जल वर्षा नहीं, रहमत वर्षा’

उम्मुल् मुअ्मिनीन (मुअ्मिनोंकी पुनीत माता) हज़रत बीबी आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अन्हाने हुजूर अलयहिस्सलातु वत्तस्लीम जब जन्नतुल् बक़ीअ (मदीनह मुनव्वरहके मशहूर क़ब्रस्तान)में तशरीफ ले जा रहे थे तब देखा कि :

"हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर वर्षा हो रही है और जब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम वापस तशरीफ लाए तो अर्ज़ किया :

"या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! अपनी मुबारक चादर इनायत फरमाऐं कि मैं उसको निचोड कर सुखा दूँ ! "

आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया :

"क्यूँ ? "

हज़रत आइशा रदियल्लाहु तआला अन्हाने अर्ज़ किया :

"हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जन्नतुल् बक़ीअमें जब तशरीफ ले जा रहे थे तब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पर वर्षा हो रही थी । "

आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया :

"ए आइशा (रदियल्लाहु तआला अन्हा) ! वह पानीकी वर्षा नहीं थी; बल्कि रहमतकी वर्षा थी ! "

सद हज़ारां हम चुनीं अश्बाह बीं,

देखो ! ऐसे तो हज़ारों उदाहरण मोजूद हैं ।

फर्क़े शां हफताद सालह राह बीं ।

जिनमें कई मीलोंका तफावत हैं ।

‘कसो कुर्आन और हदीषकी कसोटी पर’

ऐसी ही बहुत सी घटनाऐं और हालातके मकशूफात (दिलमें गय्बकी बातोंका रहस्य प्रकट होना) अव्लियाअल्लाहको पेश आते हैं । लेकिन उसको अक्ले मआद (दिव्य बुद्धि) और अक्ले नूरानी समज सकती है । साधारण लोग स्वप्न वगैरेके हालात और ता'बीर (संकेतार्थ)को समज नहीं सकते ।

सय्यिदिना हज़रत युसूफ अलयहिस्सलातु वस्सलामको स्वप्नकी ता'बीर (संकेतार्थ)का सहीह ज्ञान दिया गया था । अव्लिया अल्लाहको हज़राते अम्बिया अलयहिमुस्सलातु वस्सलामकी तरह बिल्कुल सहीह ज्ञान नहीं दिया गया । अव्लिया अल्लाहकी समजमें भूल होना संभवित है । इसी लिए सर्व उलमाए हक्क़ानी और उर्फाए रब्बानी इस बातमें सर्व संमत हैं कि अपने कश्फको, अपने इदराकातको, अपनी जानकारीको, अपने स्वप्नोंको कुर्आन शरीफ और हदीष शरीफकी कसोटी पर कसो और जो इस कसोटी पर सत्य मा'लूम हो, वहीं सच्चे हैं, नहि तो गलत हैं ।

सूचना :

किसीको नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामके दर्शन

हो तो यह दर्शन सहीह माना जाएगा और जो कुछ हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम इर्शाद फरमाऐंगे, वह कुर्आन शरीफ और हदीष शरीफके अनुसार ही होगा; और बिल्कुल सत्य होगा, लेकिन स्वप्न देखनेवालेको अथवा अहले कश्फको हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामके ऐसे कलिमात (शब्द) याद रहे, जो शरीअतके विरु द्ध हों; वह स्वीकारके पात्र नहीं हैं । इसमें देखनेवालेकी याददाश्त (स्मृति)की भूल है । हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जो कुछ इस आलमे शहादतमें (दुनियामें) इर्शाद फरमा चुके है, उसके विरु द्ध हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम कभी भी नहीं फरमाऐंगे ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मेहमान नवाज़ीकी दो अद्‌भुत घटनाऐं

कभी ऐसा भी होता है कि जो चीज़ स्वप्नमें या कश्फमें जिस स्वरूपमें दिखाई जाती है अथवा अर्पण की जाती है, वह अपने असल स्वरूपमें होती हैं ।

'जज्‌बुल् कुलूब फी दियारिल् महबूब' किताब)में हज़रत शाह अब्दुल् हक़ साहिब मुहद्दिस दहेल्वी रहमतुल्लाहि अलयहिने जो घटनाऐं लिखी हैं, उसमेंसे दो घटनाऐं यहाँ लिखता हूँ ।

(1)

एक हाजी साहिब भूकसे परेशान हूए, तो उसने अर्ज़

किया :

‘‘या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका मेहमान हूँ और भूका हूँ । ’’

उसी समय उस पर नींद छा गई और उसने देखा कि :

‘‘हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम पधारे और फरमाया :

‘‘हां, तुम हमारे मेहमान हो । ’’

और दो रोटी और एक लोटेमें ठंडा पानी इनायत फरमाया और इर्शाद फरमाया :

‘‘खाओ ! ’’

उसने एक रोटी खाई और पानी पिया ।

जब नींदसे आंख खुली तो देखा कि एक बची हूई रोटी हाथमें है और जितना पानी पिया था, उसके सिवा बचा हुवा पानी लोटेमें है !

(2)

एक दूसरे हाजी साहिबने भी ऐसा ही वर्णन किया ।

उसको हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामने स्वप्नकी स्थितिमें खरबूज़ह अर्पण किया ।

उस हाजी साहिबने स्वप्नमें देखा कि उसने उस खरबूज़हमेंसे आघा हिस्सा काट कर खाया और आघा

बाक़ी रखा ।

जब स्वप्नसे जाग्रत हुवा तो देखा कि :

“खाए हूए आधे खरबूज़हके छिलके पडे है और बचा हुवा आधा खरबूज़ह हाथमें है ।”

ऐसे बहुतसे हालात हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी इनायत और कृपाके हैं । हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामका अपने ख़ास ख़ास उम्मतीओंके साथ जो व्यवहार हैं, उससे हम सामान्य लोग बिल्कुल् अपरिचित हैं । और न ही वे लोग वर्णन करते है । किसी समय हमारी हिदायत और मार्गदर्शनके लिए कुछ कुछ दूसरोंकी हिकायतोंके साथ कुछ (अपनी बातें) वर्णन कर देते हैं । वह भी संक्षिप्तमें, विस्तार और विगतसे वर्णन नहीं करते ।

ख़ुशतर आं बाशद कि सिर्रे दिलबरां,
यही अधिक अच्छा है कि महबूब (प्रियजन)का रहस्य,

गुफतह आयद दर हदीसे दिगरां ।
दूसरोंकी ज़बानसे वर्णन हो ।

कुर्बान उस तकरूनी बुज़ुर्ग पर !

एक बुज़ुर्ग जो रव्ज़ए पाक पर कई साल तक इशाकी नमाज़के बा’दसे सुब्ह तक हाज़िर रहते थे, उन्होंने मुज़े फरमाया कि :

“हरमे पाकके दरवाज़े खुलते ही एक तकरूनी (अफ़्रीक़न)

बुजुर्ग, खस्तह हाल (दुर्दशाग्रस्त) सीधे रव्ज़ए मुबारकके निकट आ कर उच्च आवाज़से अर्ज़ करते :

“अस्सलातु वस्सलामु अलय-क या रसूलल्लाह !”

तो उस तकरूनी (अफ्रीक़न)बुजुर्गके जवाबमें रव्ज़ए पाकके अंदरसे हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम उनके सलामका जवाब (उच्च आवाज़से) फरमाते; जिसको मैं अपने कानोंसे सुनता था ।

कुर्बान उस तकरूनी काले शरीरवाले और सफेद नूरानी दिलवाले पर, जिन पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी यह इनायत हो कि उनके सदक़ेमें दूसरे भी हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलामकी आवाज़ सुनें !

उन निर्धन तकरूनी लोगोंकी मदद करो !

यह तकरूनी लोग अफ्रीक़ा देशसे वर्ष, दो वर्ष पैदल चल कर मक्का मुअज़्ज़मह और मदीनह मुनव्वरहमें हाज़िर होते है और उनमेंसे अधिकतर लोग निर्धन और नादार (दरिद्र) होते है । उनकी सेवासे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अधिक खूश होते है और मदीनह मुनव्वरहमें अधिकतर लोग निर्धन हैं, और धनवान बहुत कम हैं ।

निर्धनताका ख़ास कारण यह है कि हुज़ूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम निर्धनताको पसंद फरमाते हैं, इस कारण हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने फरमाया है :

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مِسْكِيناً وَّتَوَفَّنِىْ مِسْكِيناً وَّاحْشُرْنِىْ فِىْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنَ

ए अल्लाह ! मुझे निर्घन जीवंत रख, और मुझे निर्घनतामें मौत दे और क़ियामतमें निर्घनोंके समूहमें उठाना ।

इस कारण मैं मेरे मित्रों और दोस्त हाजीओंको प्रोत्साहन दिलाता हूँ कि वह अपने घनका जो भाग अरबस्तानमें खर्च करे, उसमेंसे अधिकतर भाग मदीनह पाकमें खर्च करे; और खास करके तकरूनी (अफ़्रीक़न) लोगोंकी अधिक सेवा करें, वह लोग अत्यंत मुबारक और मुक़र्रबीन (अल्लाह व रसूलके निकटस्थ) हैं ।

तये अर्द

हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके कुछ मुक़र्रबीन (निकटस्थ) लोग ऐसे भी होते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके दर्शन उनको ज़ाहिरी आंखोंसे होते हैं; और कुछ उम्मती ऐसे भी हैं, जिनको 'तये अर्द' (एक क्षणमें सेंकडों मीलका अंतर पार करनेकी शक्ति)की सिफत दी जाती हैं । वह लोग आंख पलकनेमें अपने स्थानसे रव्ज़ए पाक पर हाज़िर हो जाते हैं। उनके शरीर ज़िक्रे हक़ और फिक्रे हक़ तथा इश्क़े हक़से नूरानी हो जाते हैं । जिस तरह पलक उठते ही निगाह आसमानसे टकराती हैं, इसी तरह कुछ अल्लाह तआलाके ख़ास

बंदोंको नूरानी शरीर भी एक स्थानसे दूसरे स्थान तक (आंख पलकनेमें) स्थलांतर करते हैं ।

यह कोई तअज्जुबकी बात नहीं है । (सूरए 'नम्ल'में तख्ते बिलकीसकी घटना अनुसार) जब हज़रत सुलय्मान अलयहिस्सलामके सहाबी (हज़रत आसिफ रदि.) यह सिफते निगाह और यह सिफते तये अर्द रखते हैं, तो खातिमुन्नबिय्यीन रहमतुल् लिल् आलमीन सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके उम्मती सर्व सिफतोंमें उनसे अधिकतर शक्तिशाली होने चाहीए । दूसरे अम्बियाए मुर्सलीन अलयहिमुस्सलातु वस्सलामकी तुलनामें जिस क़दर कमालात (खूबियाँ) और अल्लाह तआलाके कुर्ब (निकटता)में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको अन्य अम्बियाए मुरसलीनकी तुलनामें अधिक बुजुर्गी प्राप्त हैं, इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके खास उम्मतीओंको पूर्व अम्बियाकी उम्मतकी तुलनामें हर गुणमें बुजुर्गी और उच्चता प्राप्त हैं ।

इसकी दलीलमें हदीसे मुबारक मोजूद है :

عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَآءِ بَنِیْ اِسْرَائِیْلُ

मेरी उम्मतके उलमा बनी इस्राईलके अम्बिया जैसे हैं ।

अब भी अगर कुछ शंका रही हो तो :

हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहिब (रह.)के ग्रंथ :

- इन्तिबाह फी सलासिले अव्लिया अल्लाह

- अन्फासुल् आरिफीन
- क़व्लुल् जमील
- कलिमाति तय्यिबात
- फुयूज़ुल् हरमैन
- दुर्रुस्समीन फी मुबश्शिरातिन्नबिय्यिल् अमीन

हजरत शाह अब्दुल् हक़ साहिब (रह.)के ग्रंथ :

- (हज़रत गौस पाक रह.के ग्रंथ) 'फुतूहुल् गैब'का विवरण
- जज़्बुल् कुलूब फी दियारिल् महबूब

हजरत मिर्ज़ा जानेजानां साहिब (रह.)के ग्रंथ :

- दुर्रुल् मआरिफ
- सब्अ सय्यारह
- ईज़ाहुत्तरीक़ह

हजरत गौसे आ'ज़म शय्ख़ अब्दुल् कादिर जीलानी साहिब (रह.)के ग्रंथ :

- गुनियतुत्तालिबीन
- फुतूहुल् गैब तथा
- आप (रह.)के बयानोंके संग्रह 'फुयूज़े यज़दानी'...आदि ग्रंथ पढने चाहीए ।

मज़हबकी बुनियाद दलीलों पर नहीं

मैंने जो कुछ हालात (वृतांत) और कमालात (खूबियाँ) अव्लियाए किराम (रह.) और नबीए करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामके लिखे है, अक्ले मआश (पार्थिव बुद्धि) रखनेवाले और कमज़ोर ईमानवाले लोग उसकी सत्यतामें सोच–विचार करेंगे; और जिनको अल्लाह तआलाने अक्ले मआद (दिव्य बु द्ध) और अक्ले नूरानीमेंसे हिस्सा दिया है, वह लोग दिलसे स्वीकार कर

लेंगे ।

अक्ले मआश (पार्थिव बुद्धि)वालोंके बारेमें हज़रत मव्लाना रूमी (रह.) फरमाते है :

पाये इस्तिदलालियां चौबीं बुवद,
दलीलोंके पांव और पाये लकड़ीके बने होते है,
पाये चौबीं सख़्त बे तमकीं बुवद ।
लकड़ीके पांव और पाये मज़बूत और टिकाउ नहीं होते ।
गर ब इस्तिदलाल कारे दीं बुदे,
अगर मज़हबका आधार दलीलों पर होता तो,
फख्रे राज़ी राज़दारे दीं बुदे ।
इमाम फख्रुद्दीन राज़ी दीनके राज़दार और रहस्यके जानकार होते ।
चूं कुनद ईं कारहा हुकमा फुजूल,
जो सामान्य आलिम ऐसे काम कर सकते तो,
हक़ तआला कय फरिस्तादे रसूल ?
अल्लाह तआला रसूलोंको कयूँ भेजते ?
कारे पाकांरा क़ियास अज़ ख़ुद मगीर,
पवित्र लोगोंके कामोंका मूल्यांकन अपने अनुमानोंसे मत कर,
गर चे बाशद दर नविश्तन शेरो शीर ।
चाहे लिखनेमें शेर (सिंह) और शीर (दूध) दोनों समान है
लेकिन वास्तवमें दोनोंके दरमियान बहुत बडा तफावत है ।

- जब हुजूर नबीए करीम अलयहिस्सलातु वत्तस्लीमके उम्मती,
- (हज़रत सुलय्मान अलयहिस्सलामके प्रधानमंत्री) हज़रत आसिफ (रदि.) वगैरह

आंख पलकनेमें हज़ारों मील (कि.मी.)का प्रवास कर सकते हैं,

तो हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलाम कि :

- जिनका नूरे हक़ीक़ते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम, नूरे हक़का प्रतिबिंब है और
- जिस नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे सर्व अम्बिया और मुर्सलीन अलयहिमुस्सलातु वस्सलामका अस्तित्व क़ायम हुवा हैं,

ऐसी पवित्र ज़ातका शबे मेअराजमें थोडे समयमें अर्शे मुअल्ला पर जाना और वापस आ जाना कया हयरतकी बात हैं ? ! जब हुजूर अलयहिस्सलातु वस्सलामके कमालात (खूबियाँ) और कुर्ब (अल्लाह तआलाकी निकटता)की तलाशमें अम्बिया और मुर्सलीन अलयहिमुस्सलातु वस्सलाम परेशान हैं, तो गय्र (पराये)को हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके मुआमलातमें चिंतन—मनन और तलाश करना बिल्कुल फुजूल (व्यर्थ) है ।

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बत ही ईमानकी परिपूर्णता है

मैं लिख चुका हूँ और पुनःअंतमें लिखता हूँ कि रसूले करीम अलयहिस्सलातु वस्सलामके इनायात और इकरामके जो हालात (वृतांत) मैंने लिखे है, वह मेरी प्रतिष्ठा बढानेके लिए अथवा गर्वके लिए लिखे नहीं है; बल्कि गय्बके इशारे पर लिखे है और इसी लिए लिखे हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे मुसलमान मुहब्बत पैदा करें; कयूँ कि हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बत ही ईमानकी परिपूर्णता है; और यह मुहब्बत ही हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके क़ब्र और हश्रमें साथ देनेका सुंदर वसीला और माध्यम हैं ।

एक सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हुने हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे अर्ज़ किया :

"ए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! क़ियामत कब है ? "

तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया:

"तू क़ियामतका हाल पूछता है; तूने क़ियामतके लिए कया जमा किया है ? "

(उसने) अर्ज़ किया :

"ए अल्लाहके नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! मेरे पास तो कोई नेक अमल नहीं है ! "

हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया :

"कुछ भी है ? "

तो उस सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हुने अर्ज़ किया :

“ए अल्लाहके नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ! मेरे पास हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी मुहब्बतके सिवा दूसरा कुछ नहीं है ।”

तब हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इर्शाद फरमाया,

‘अल् मर्उ मअ मन् अहब्ब ।’

जो जिसके साथ मुहब्बत करेगा वह (क़ियामतमें) उसके साथ होगा ।

इसी लिए जो मुसलमान अपना भला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका साथ इच्छता हो, वह :

- हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे मुहब्बत पैदा करे और
- दुरूद शरीफको अकषर पढे, और
- अगर सामर्थ्य हो तो रव्ज़ए पाक पर हाज़िर हो और हज करे ।
- अगर वहां पहूँचनेका सामर्थ्य न हो, तो हुजूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका अनुसरण करे और मुहब्बत करे ।

मुहब्बतका सुबूत (प्रमाण) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका अनुसरण है । मात्र ज़बानी (मौखिक) बातें करना व्यर्थ है ।

मदीनह मुनव्वरहके यात्रीओंको आवश्यक मार्गदर्शन

- जब तक शक्य हो, मदीनह पाकमें वुजूके साथ रहे ।
- आने–जानेमें इस बातका संपूर्ण ख्याल रहे कि रव्ज़ए पाककी तरफ पीठ न हो ।
- मदीनह पाकके रहनेवालोंका मान और सन्मान करे, उन पर गुस्सा न करे ।
- उनके कामों पर अे'तिराज़ (टीप्पणी) न करे और उन पर बद गुमानी न करे; उनको खूश करनेसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम खूश होते है, और नाराज़ करनेसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम नाराज़ होते हैं । मेरा अपना भी यह अनुभव है ।
- मदीनह पाककी किसी भी वस्तुकी बुराई न ज़बानसे करे, न दिलमें रखे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको वहांकी हर वस्तु प्रिय है ।

इस बाबतमें एक बोघदायक घ्रटना यहाँ प्रस्तुत है ।

मदीनह मुनव्वरहमें एक साहिबे निस्बत (अल्लाहवाले) बुजुर्गकी ज़बानसे इतनी बात निकल गई कि शाम अथवा हिन्दुस्तानका दही यहांके दहीसे अच्छा है ।

आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने आलमे ख्वाब (स्वप्न)में अथवा आलमे वाक़िअहमें फरमाया कि :

''हमारे यहांसे चले जाओ, वहाँ जा कर रहो, जहाँका दही अच्छा है ।'' {'फतावा रहीमिय्यह', 2 / 241}

{"अनुवादकीय" समाप्त}

- पवित्र ख़्‌जहके समीप हरममें अकषर निर्धन तकरूनी (अफ्रीक़न) लोग बहुत बैठे रहते हैं, और वे लोग बहुत ही निर्धन—गरीब हैं। उनकी सेवा रूपिये, वस्त्र आदिसे बहुत करना चाहीए ।
- मदीनह मुनव्वरहके व्यक्ति तो सेवा और मान तथा सन्मानके पात्र हैं ही, वहांके कुत्तोंकी सेवा और सन्मान भी की जाए तो बेहतर हैं ।

हज़रत सअ्‌दी रहमतुल्लाहि अलयह फरमाते हैं :

यक जां चे कुनद सअ्‌दी ये मिस्कीं
के दो सद जां,
मुज़ निर्धनके पास मात्र एक ही जान है,
अगर सेंकडों जान भी होती तो
कुर्बान व फिदाए सगे दरबाने मुहम्मद (सल.)
उसको भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके
दरबान कुत्तों पर कुर्बानि और न्योछावर कर दूँ !

- मदीनए पाकमें इघर उघर बगीचोंमें घुमता न फिरे । जो समय सोने और खाने वगैरहसे बचे, उसको हरमे नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लममें गुज़ारे । आंखें ख़्‌जए पाककी ओर रहे और दिल ख़्‌जहवालेकी ओर रहे ।

وَمَا عَلَيْنَا اِلَّا الْبَلَاغُ

अल्लाह तआलाके संदेशको मात्र पहूँचाना हमारा काम हैं

परिशिष्ट : 1 पुस्तकें (किताबियात)

परिशिष्ट : 2

शख्सियात (व्यकितयाँ)

अ / आ

इ / ई

उ

क

ख

च

ज

ज

त

भ

म

य

र

व

श

स

ह

परिशिष्ट : 3 मक़ामात (जगहे, स्थाने)

अ

इ

क

ख

ग

र

ल

श

स

ह